नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

राजभाषा

रत्नसिंधु

हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका

• वर्ष - १ अंक - द्वितीय •

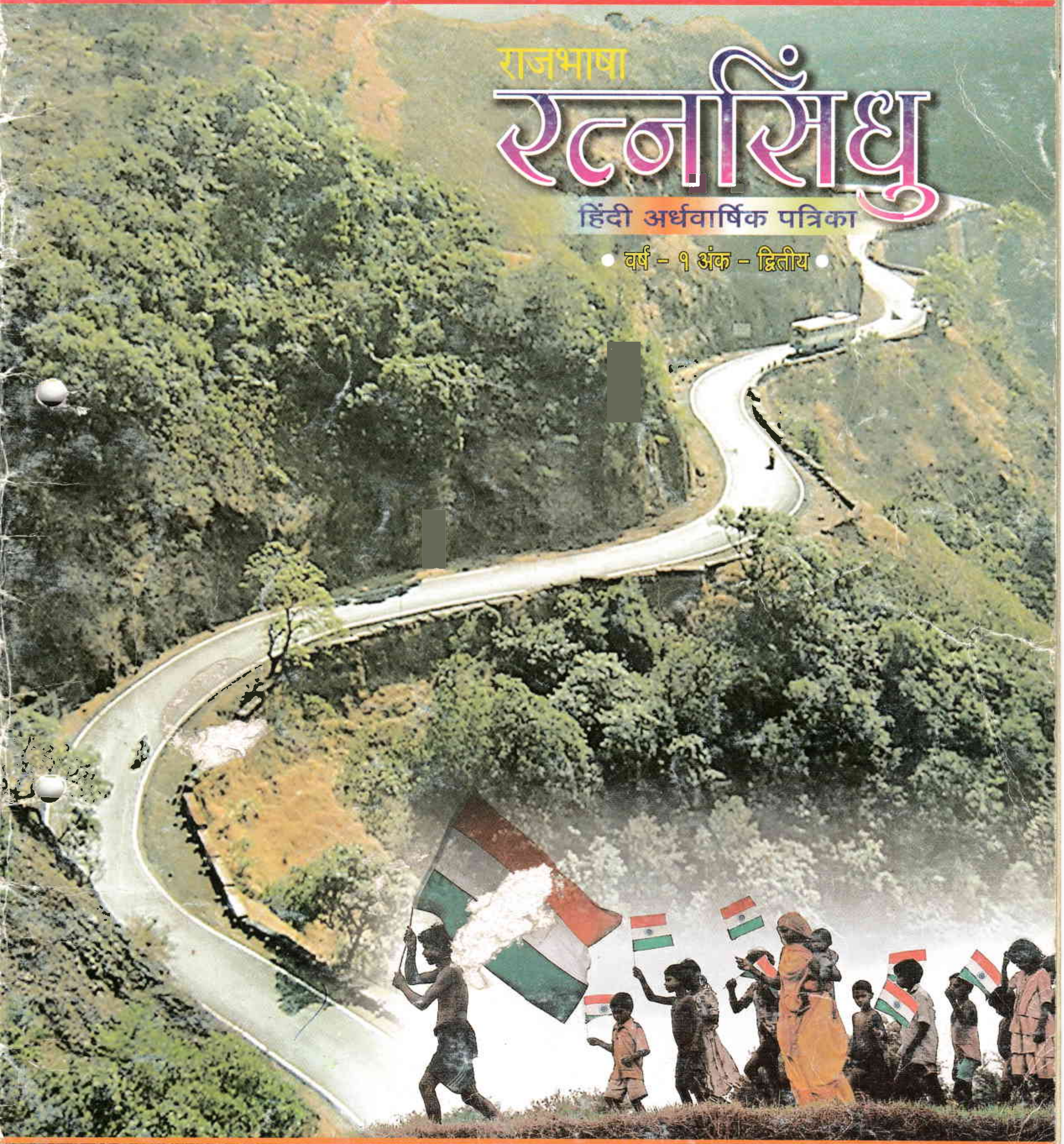

संयोजक - बैंक ऑफ़ इंडिया

दसवीं कक्षा

ऋजूता - 85.38%
बैंक ऑफ़ इंडिया
प्रकाश दलवी की सुपुत्री

प्राजक्ता - 75.69%
कोंकण रेल
सुरेश रास्कर की सुपुत्री

सौरभ - 93.07%
कोंकण रेल
सदानंद लाड के सुपुत्र

हर्ष - 91.38%
बैंक ऑफ़ इंडिया
हेमंत खेर के सुपुत्र

सौरभ - 92.00%
बैंक ऑफ़ इंडिया
अमर महिंद्रे के सुपुत्र

पंकज - 78.92%
कोंकण रेल
उदय अरबोले के सुपुत्र

अनिस - 86.61%
कोंकण रेल
सुधीर साळवी के सुपुत्र

शीतल - 86.15%
कोंकण रेल
विठ्ठल हाके की सुपुत्री

अस्मिता - 76.15%
वैनगंगा कृष्णा ग्रामीण बैंक
तुषार कीर की सुपुत्री

पद्मजा - 76.30%
वैनगंगा कृष्णा ग्रामीण बैंक
श्री तुळशीदास सावंत की सुपुत्री

बारहवीं कक्षा

स्वप्निल - 90.17%
वैनगंगा कृष्णा ग्रामीण बैंक
सुशील दाभोळकर के सुपुत्र

अक्षय - 89.17%
वैनगंगा कृष्णा ग्रामीण बैंक
तुषार कीर के सुपुत्र

प्रियांका - 80.67%
वैनगंगा कृष्णा ग्रामीण बैंक
भिमराव इंगले की सुपुत्री

ओंकार - 77.12%
बैंक ऑफ़ इंडिया
एस. जी. पळसुले के सुपुत्र

श्रीरूप - 83.67%
आकाशवाणी
चंद्रशेखर मडिवालर के सुपुत्र

प्रियांका - 85.17%
वैनगंगा कृष्णा ग्रामीण बैंक
धनंजय पटवर्धन की सुपुत्री

नीरजा - 83.50%
वैनगंगा कृष्णा ग्रामीण बैंक
विजयानंद जोशी की सुपुत्री

मयूरी - 80.00%
वैनगंगा कृष्णा ग्रामीण बैंक
राजेंद्र सुर्वे की सुपुत्री

कोर कमिटी सदस्य

पुरुषोत्तम डोंगरे
(आकाशवाणी)

श्रीधर बनसोड
(बैंक ऑफ महाराष्ट्र)

प्रदीप कुमार
(बी.एस.एन.एल.)

जनार्दन शिंदे
(कोंकण रेल्वे)

सतीश रानडे
(न्यू इंडिया एश्योरन्स कं.)

रमेश गायकवाड
(बैंक ऑफ़ इंडिया)

अध्यक्ष की कलम से...

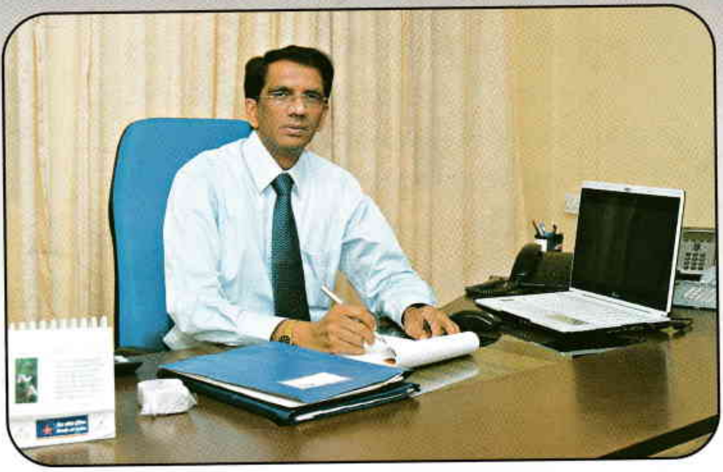

'राजभाषा रत्नसिंधु' का प्रवेशांक पाठकों द्वारा सराहा गया है। इस अर्धवार्षिक पत्रिका का दूसरा अंक पाठकों को सौंपते हुए मुझे खुशी हो रही है। आपके प्रोत्साहन से ही समिति ने आपके सामने दूसरा प्रकाशन नए प्रयोग के साथ रखा है।

गुणवत्ता की कोई उपरी सीमा नही होती। संपादकीय मंडल का यह निरंतर प्रयास रहेगा कि आनेवाला हर एक अंक पिछले अंक से बेहतर तथा पठनीय हो।

मुझे आशा है कि राजभाषा रत्नसिंधु आगे आपको रत्नागिरी और अन्य पड़ोसी जिलों की ऐतिहासिक घटनाएं, प्राकृतिक विविधताएं, सांस्कृतिक परंपराएं, तीर्थक्षेत्र, पर्यटन स्थल आदि से परिचित करा देगा।

मंगल कामनाओं सहित,

धन्यवाद।

आपका

(व्ही. बी. वारंग)

संपादकीय

आप सभी पाठकगणों को प्रथम सहृदय से धन्यवाद देना चाहता हूँ। आपने राजभाषा रत्नसिंधु के प्रवेशांक को दिए गए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से हमारा मनोबल बढ़ा दिया है, इसी मनोबल और हौसले से ही हम राजभाषा रत्नसिंधु का द्वितीय अंक आपके कर कमलों में नये उत्साह के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं।

समिती जिस प्रदेश या क्षेत्र में काम कर रही है, उस में क्षेत्रीय भाषा मराठी को साथ में लेकर राजभाषा हिंदी में यहाँ की संस्कृति और सभ्यता का दर्शन कराएगी तथा विविध आलेख नूतनता के साथ प्रस्तुत करेगी।

राजभाषा रत्नसिंधु का प्रवेशांक अपने सदस्य कार्यालयों को समर्पित किया था। अभी द्वितीय अंक में जनसंचार माध्यमों में तकनीकी हिंदी की प्रायोगिक स्थिती को आपके सामने रख रहे है। डा. मधाले जी., प्रा. शरद कणबरकर सर आपके लिए संत तुलसीदास को अपने साहित्यिक लेखनी से प्रस्तुत कर रहे है. बैंकिंग क्षेत्र तथा ग्रामीण विकास से जुडे श्री. राउत जी ने वित्तीय समावेशन की जानकारी दी है। एक नया स्तंभ शाबास बच्चो! विविधता में प्रस्तुत है, वन संपदा राज्यों का महत्व, मैं पृथ्वी बोल रही हूँ, व्यक्तित्व विकास, करेली की सब्जी, काव्य, आदि विविध नाविन्यपूर्ण साहित्य के पुष्प प्रस्तुत अंक में शामिल हैं।

रत्नागिरी जिले की विशेषताओं में प्रस्तुत है, एक महान व्यक्ति, रत्नागिरी में कुछ वर्ष वास्तव्य में रहे और सामाजिक कार्य में जिनका बडा योगदान रहा, वह स्वातंत्र्यवीर सावरकर जी, जिन्होंने स्थानीय भाषा के साथ हिंदी भाषा को राष्ट्र की भाषा बनाने में भी आपका योगदान रहा है। उनके विचार, कार्य को राजभाषा रत्नसिंधु जरूर स्पर्श करना चाहेगा। स्वा. सावरकरजी के बारे में कुछ आलेख प्रस्तुत है। इस में विशेष सहयोग मिला है रत्नागिरी विशेष कारागृह अधिक्षक मा. कापसे सर जी का उन्हें हृदय से धन्यवाद देना चाहुँगा।

रत्नागिरी दर्शन में कोंकण की वादियॉ, उसकी ऐतिहासिकता, विविधता, सुंदरता से आपका मन मुग्ध होगा। पढ़ने के बाद आपको रत्नागिरी दर्शन की इच्छा जरूर निर्माण होगी। समिति आगामी अंक से आगे निरंतर रत्नागिरी तथा पडोसी जिले की सांस्कृतिकता, ऐतिहासिकता एवं विविधता को आपके सामने प्रस्तुत करेगी।

इस प्रकाशन में सदस्य कार्यालय के कार्यालयीन प्रधान, सभी स्टाफ सदस्य तथा कोर कमेटी के सदस्यों का बड़ा योगदान रहा है।

राजभाषा रत्नसिंधु आपके सुझाव संदेशो तथा मौलिक आलेखों का स्वागत करता है।

शुभकामनाओं के साथ

धन्यवाद !

रमेश गायकवाड

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

■ अध्यक्ष ■

व्ही. बी. वारंग
आंचलिक प्रबंधक,
बैंक ऑफ़ इंडिया रत्नागिरी.

■ संपादक ■

रमेश गायकवाड
राजभाषा अधिकारी, बैंक ऑफ़ इंडिया

■ विशेष मार्गदर्शन ■

डॉ. एम. एल. गुप्ता
उपनिदेशक, गृहमंत्रालय, राजभाषा विभाग

■ विशेष सहयोग ■

प्रा. डॉ. एस. डी. मधाळे
(हिंदी विभागाध्यक्ष, गोगटे जोगळेकर महाविद्यालय)

श्री. कृष्णा दिवटे
बैंक ऑफ़ इंडिया, रत्नागिरी

■ कोर कमेटी सदस्य ■

सतीश रानडे	न्यू इंडिया एंश्योरेंन्स कंपनी
प्रदीप कुमार	भारत संचार निगम लि.,
पुरुषोत्तम डोंगरे	आकाशवाणी
जनार्दन शिंदे	कोंकण रेल
श्रीधर बनसोड	बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र
रमेश गायकवाड	बैंक ऑफ़ इंडिया

■ मुखपृष्ठ संकलपना तथा प्रकाशक का नाम ■

रमेश गायकवाड
सदस्य सचिव, नराकास.

अं त रं ग

अध्यक्ष की कलम से.... ....
संपादकीय
जनसंचार माध्यमों में तकनीकी हिंदी की प्रायोगिक स्थिति ....
संत तुलसीदास के 'रामचरित-मानस' का एक सौंदर्य स्थल..........
मैं पृथ्वी बोल रही हूँ..........
वन सम्पदा संपन्न राज्यों का महत्त्व ....
व्यक्तित्त्व का विकास ....
वित्तीय समावेशन ....
करेले की सब्ज़ी..........
पू. साने गुरुजी..........
क्रांतीसूर्य स्वातंत्र्यवीर सावरकर ....
स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी का शिरगांव (रत्नागिरी) में वास्तव्य तथा कार्य ....
रत्नागिरी विशेष कारागृह ....
आपने कहा है ....
झटपट बिर्याणी ....
जोड़ रहे हैं भारत ....
हिंदी अंकों का शब्द स्वरुप..........

• संपर्क कार्यालय •

अध्यक्ष,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय,
शिवाजीनगर, रत्नागिरी, महाराष्ट्र - 415 639.

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के हैं। अतः यह आवश्यक नहीं कि इनसे सम्पादक मण्डल सहमत हो।

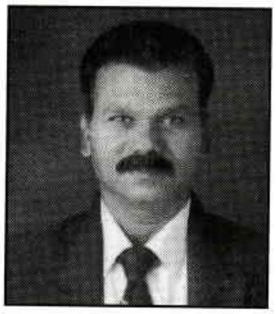

प्रा. डॉ. शाहू दशरथ मधाळे
हिन्दी विभाग अध्यक्ष,
गोगटे जोगळेकर महाविद्यालय,
रत्नागिरी

राष्ट्रीय संगोष्ठी
हिन्दी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

जनसंचार माध्यमों में तकनीकी हिंदी की प्रयोगिक स्थिति

शब्दों को बनाने की प्रक्रिया, उसका प्रयोग और शब्दों की उत्पत्ति (अनुवाद नहीं) के संबध में मैं अपनी बात करना चाहूँगा। शब्द निर्मिती के साधारणता दो प्रकार होते हैं। एक सैद्धांतिक पद्धती अर्थात मूल 'धातु' और 'व्याकरण' से बने शब्द तथा 'अनुवादित' शब्द आज तकनीकी के बहुताधिक शब्द अनुवादित शब्द है जिनका प्रयोग हम कर रहे हैं।

औद्योगिक क्रांति के बाद संचार माध्यमों का विकास हुआ. मुद्रण तकनीक के साथ-साथ फोटोग्राफी ने आगे चलकर फिल्म, रेडियो, दूरदर्शन, संगणक, इंटरनेट आदी का विकास किया और एक नये जनसंचार के युग का आरंभ हो गया। विकास के बाद दुनिया भर में जनसंचार माध्यम के तेजी से फैलने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई नये जनसंचार माध्यमों की मुख्य निर्मिति और शोध हो रहा हैं। इसलिए जीवन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन वस्तुओं को हमें आयात करना आवश्यक हो गया। इन वस्तुओं के साथ-साथ उनकी भाषा भी आयात हो रही हैं और हम सिर्फ उसे उपभोक्ता के रूप में स्वीकार करते चले जा रहे हैं। हम सिर्फ शब्दों को बनाने में ही जुटे हैं। शब्दों को गढ़ना और उनका प्रयोग करना हमारा काम है और उन्हें प्रचलित करना माध्यमों का। वास्तविकता तो यह है कि नये शब्दों को गढ़ना या निर्माण करना और उसका प्रचलन मिडिया की ओर से करना अधिकाधिक कठिन होता जा रहा है उसके अनेक कारण है। एक माध्यम स्वयं कठिन भाषा-शब्दों प्रयोग करना नहीं चाहते क्योंकि बाजार का दबाव (या मुनाफे की वृत्ति) उनपर हावी है और शीघ्रातिशीघ्र संदेशों को, सूचनाओं को जनता तक पहुँचाने की होड सी उनमें लगी हैं, इसलिए वे कामचलाऊ भाषा-शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं। परिणामत: उन्हीं शब्दों का प्रयोग शहर से लेकर गांव, गली, मुहल्ले तक हो रहा है जिनका प्रचार - प्रसार माध्यम कर रहे हैं।

आज कम्प्युटर, रेडिओ, इंटरनेट, ई-मेल आदि माध्यम और उनपर कार्य करने के लिए प्रयुक्त होनवाले अंग्रेजी शब्द ही उनके रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन चुके हैं। हिंदी के अनुवादित शब्दों के प्रयोग से अंग्रजी के शब्दों का प्रयोग करना उन्हें सुगम और सरल लग रहा हैं। हिंदी में अनुवादित शब्द प्रयोग को लेकर स्थिति इसप्रकार कि हैं की, 'सर्च' को 'खोजें' कहने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं। 'सॅटेलाईट' को 'उपग्रह' कहने के बजाए 'सॅटेलाईट' ही

कहते हैं।

इसलिए नये शब्दों को हिंदी की प्रकृति के अनुकूल गढने, बनाने के प्रयास भी निरंतर करने होंगे। संचार माध्यमों को एक साथ करोडों लोग देखते, सुनते हैं और उसका प्रयोग करते हैं। उन्हीं से शब्दों का प्रचलन करना आसान हैं।

भाषा विज्ञान ने शब्दों के निर्माण संबंधी एक नयी दृष्टी हमारे सामने रखी है। किन्तु हमारी मुश्कील यह है कि तकनीकी वस्तुएं पहले आ रही हैं और हम बाद में उनके शब्द गढ़ रहे हैं। इसलिए अन्य भाषा, भाषी समाज मन को भावों को ध्यान में रख कर उनका निर्माण करना जरुरी हैं। जैसे निर्माण करना हमारा काम हैं, वैसे उनका प्रचलन करना, मतलब अन्य व्यक्तियों में उसके स्थाई संस्कार डालना भी हमारा दायित्व हैं। तकनीकी शब्दों को बनाते समय हमें मुख्य रूप से यह ध्यान में रखना होगा की उनका अनुवाद उनके पर्यायवाची शब्द जो दुसरी भाषा के भावों को प्रकट और ग्रहण करें ऐसे हो। तकनीकी शब्दों का दोष यह है कि वे बोझिल एवं दुरुह होते हैं। उससे हमे बचना होगा।

कुछ शब्दों के उदा. हैं - 'कैलकुलेटर' के लिए 'परिकलित्र', डिपलोमा के लिए 'पत्रोपायी', 'फीड बॅक' के लिए 'पुनर्भरण', आदि का हम प्रयोग कर रहे हैं।

फिल्म कैमरे में 'एक्शन' से लेकर 'पॅकअप' तक प्रयुक्त होनेवाली शब्दावली अधिकतर अंग्रेजी की ही है। जैसे - किल्कि, फेड इन, फेड आऊट, ग्रफिक, ग्राफिक डिजायनर, हेड फोन, जूम, मिक्सर आदि।

मैंने 'रिहर्सल' के लिए दो शब्द देखे 'पूर्वाभ्यास' और 'पूर्वाभिनय'। 'पूर्वाभिनय' बडा अच्छा लगा क्योंकि 'अध्यास' में अध्ययन की प्रक्रिया रही हैं, जिस का संबंध पढ़ने से या वाचन के साथ अधिक रहा हैं और 'पूर्वाभिनय' मे अभिनय की निरंतरता अभिव्यक्त हो रही है।

कुछ आपत्तिजनक शब्द भी प्रयुक्त हो रहे हैं। जैसे - 'जिप' के लिए 'चिप्पड' शब्द भी कुछ अटपटा लग रहा हैं। 'ऑपरेशन' के लिए 'एडस' शब्द का प्रयोग हुआ हैं। (जनसंचार माध्यमों में हिंदी - डॉ. चंद्रकुमार पृ. ११६)

हमें कई बार नये शब्द भी बनाने होंगे जैसे - 'इफैक्ट' के लिए प्रयुक्त शब्द 'प्रभाव', प्रभाव बडा अच्छा शब्द हैं किंतु 'इफैक्ट' का जो असर हमारे मन पर होता है वह 'प्रभाव' का अब नहीं रहा। 'प्रभाव' अप्रभावी नहीं हैं।

झटपट वेज बिर्याणी

सामग्री	- बासमती चावल २५० ग्रॅ.
बड़े आकारवाली प्याज	- ३ कप कटी हुई
लसून पेस्ट	- एक छोटा चमच
अदरक पेस्ट	- एक छोटा चमच
टमाटर प्युरी	- एक बडे टमाटर की
हलदी पावडर	- आधा चमच
मिर्च पावडर	- स्वादनुसार
बिर्याणी मसाला	- २ चमच
घी	- २ बडे चमच
तेल	- २ बडे चमच
दही	- आधा कप
पुदीना	- १ कप

खडा मसाला : दालचिनी, लवंग, तेजपत्ता, इलायची, फुलचक्री, कटी हुई फुल गोबी, गाजर, हरी मटर एक कप

प्रणाली :

पहले कढ़ाई में तेल गरम कर। उसमें दो कप प्याज बदामी होने तक भुने और अलग रखे बचे हुए तेल में घी तथा खडा मसाला डालकर भुन ले उसमें एक कप प्याज डालकर भुने। अदरक का पेस्ट, लसून का पेस्ट, हलदी पावडर, मीर्च पावडर, बिर्याणी मसाला मिलाले। आधा कप पानी मिलाकर तेल अलग होने तक पकाए टमाटर प्युरी मिलाकर धिमी आँच पर रखे कटी सब्जी, चावल दही, पुदिना डाल दे नमक स्वाद अनुसार मिलाएँ, पानी मिलाकर चाँवल पकाए गरम गरम परोसे उपरसे भुना हु आ प्याज और बारीक कटी हुई धनिया से सजाकर रायता के साथ ही परोसे

श्रीमती हरिप्रिया र. केसरी
कोंकण रेलवे में कार्यरत
पी.आई.डी. रणजित केसरी
की पत्नी

प्राचार्य शरद कणबरकर

संत तुलसीदास के 'रामचरित्र - मानस' का एक सौंदर्यस्थल

हिंदी-भक्ति-साहित्य में संत तुलसीदास का स्थान सर्वोपरि है, सर्वश्रेष्ठ है। संत तुलसीदास सर्वश्रेष्ठ रामभक्त कवि थे। मूल नक्षत्र के प्रथम चरण पर पैदा होने के कारण वह पुत्र माता-पिता की मृत्यू का कारण न बने इसलिए तुलसीदास के माता-पिता ने अपने नवजात शिशु को घूरे पर फेंक दिया। साधु-संतों ने उस बालक को उठा लिया। उसे पाल पोसकर बडा किया। युवावस्था में रत्नावली नामक एक सुंदर युवती के साथ उसका विवाह कर दिया।

बचपन से माता-पिता के प्रेम से वंचित तुलसीदास अनुपम सुंदरी रत्नावली को पाकर सुध-बुध खो बैठे। दिनरात, चौबीसो घंटे अपने पति का यों चिपके बैठे रहना रत्नावली को अच्छा नहीं लगा। अत: एक दिन वह अचानक तुलसीदास को बिना बताए अपने मैके चली गयी। अपनी पत्नी का विरह सहा न जानेसे तुलसीदास उसी रात बादलों के गर्जन-तर्जन में, कडकती बिजली में, धुवाँधार बारिश में, बाढ आयी नदी में एक बहती लाश को लकडी समझकर पकडकर नदीया के उस पर पहुँच गये। रस्सी समझकर एक साँप को पकडकर तुलसीदास उपर की मंजिल पर पहुँचे। पत्नी को जगाया। तब रत्नावली को अपने पति का यह कृत्य ठीक नहीं जचा। अत: उसने अपने पति से कहा,

"अस्थिचरममय देहमय वामें ऐसी प्रीती?
अगर वह होले राममहुँ तो न होती भवभीति!"

अनुपम सुंदरी रत्नावली की इस मीठी .... से तुलसीदास के होश ठिकाने पर आये। तभी वे स्त्री-रति-भाव से पूर्णतया विरक्त हुए। वहाँ से त्वरित चले जाकर वे रामभक्ति में ऐसे जुट गए कि आखिर वाल्मिकी के समान पूज्य हो गए। तुलसीदास बहुत ही नम्र, विनयी, एवंम सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। राम-नाम के महात्म्य और राम की कृपा में उनका दृढ विश्वास था।

तुलसीदास के जीवन का अधिकांश समय, काशी, अयोध्या और चित्रकूट में व्यतीत हुआ। कहते हैं उन्होंने ३५ ग्रंथों की रचना की; परंतु सर जार्ज ग्रियर्सन ने तुलसीदास के प्रामाणिक ग्रंथ १२ बताये हैं। इनमें से रामचरित मानस, कवितावली और विनय-पत्रिका ये तीन ग्रंथ अधिक प्रसिद्ध हैं। 'रामचरित-मानस' एक विश्व विख्यात ग्रंथ हैं। विश्व की अनेक भाषाओं में उसका अनुवाद हुआ हैं। हिंदी प्रवेश में आज भी 'रामचरित मानस' का हर दिन प्रात:काल बडे ही भक्तिभाव से और श्रद्धा से पठन होता है।

संत तुलसीदास के समय की भारत की राजनीतिक परिस्थिति चिंताजनक थी। मुगल सत्ता अपने ही सुख-विलास में मदमस्त थी। उसे भारत की दु:खी प्रजा से कोई लेना-देना

नहीं था। भारत का किसान अकाल से दु:खी था, पीडित था। विपरित परिस्थिती में भी बडे ही कष्ट से उपजाये हुये अनाज को मुगल-शासन के अफसर खलिहान से ही उठा ले जाते। मुगलों के शासनकाल में अनाज उपजानेवाला किसान ही अनाज के लिए मुँहताज था। प्रजा के सुख-दु:ख की पूछताछ करनेवाला कोई था ही नहीं।

संत तुलसीदासने समकालीन परिस्थिति का गंभीरता से विचार कर मन ही मन निश्चय किया कि श्रीराम की कथा द्वारा अन्यायी रावण राज का अंत और कल्याणकारी रामराज्य की संस्थापना।

तुलसीदास का 'रामचरित मानस' तत्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में इसलिए श्रेष्ठ है कि उसने जन-मानस की स्खलित मनोदशा को एक सुदृढ सहारा दिया। जीने की हिम्मत दी।

संत तुलसीदास के ऐसे विश्व-विख्यात प्रबंध-काव्य-महाकाव्य के एक-दो सौंदर्य स्थलों का परिचय देना प्रस्तुत लेख का उद्देश है।

क्रुद्ध विश्वामित्र मुनि अयोध्या में राजा दशरथ के दरबार में आकर कहने लगे ''हे राजा! राजा प्रजा का संरक्षक होता है। हम ऋषि-मुनी जगत की कल्याण-कामना से जंगल में यज्ञ-याग करते हैं; परंतु राक्षस आकर हमारे अनुष्ठान में बाधा डालते हैं। ऋषि-मुनियों को उठाकर यज्ञ की अग्नि में फेंकते हैं। अत: हे राजन! हम संकटग्रस्त ऋषि-मुनियों का रक्षण कीजिए।''

राजा दशरथ धनुष्यबाण लेकर तुरंत ऋषि-मुनियों की रक्षा के लिए जाने के लिए तैयार हुए। परंतु अभी-अभी अपनी धनुर्विद्या की शिक्षा पूर्ण कर लौटे हुए राजकुमार राम और लक्ष्मण वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने कहा, ''पिताश्री! अभी-अभी हम अपनी धनुर्विद्या की शिक्षा पूर्ण कर आये हैं। अत: आप हमें ही अपनी अर्जित धनुर्विद्या का परीक्षा करने का मुझे और लक्ष्मण को अनुमति दीजिएगा।''

मजबूरन राजा दशरथ ने राम और लक्ष्मण को जंगल में यज्ञ करनेवाले ऋषियों-मुनियों के संरक्षण के लिए जाने की आज्ञा दी।

दोनों सुकुमार विश्वामित्र ऋषि के साथ जंगल की ओर चल पडे। अनेक राक्षसों का संकट-मुक्त करते हुए वे आगे बढते जा रहे थे। तभी जंगल में ऋषि विश्वामित्र को खबर मिली कि मिथिला में सीता का स्वयंवर होने जा रहा है। राजकुमारी के स्वयंवर का निमंत्रण अयोध्या गया ही होगा। अत: अयोध्या के दोनों राजकुमारों को लेकर जनकपुरी पहुँचना अपना कर्तव्य है, ऐसा विचार कर विश्वामित्र मुनि जनकपुरी पहुँचे।

प्रात:काल जल्दी उठकर राम और लक्ष्मण गुरू विश्वामित्र की आज्ञा लेकर पुष्पवाटिका में भ्रमण के लिए गए। रंग-बिरंगे फुलों का सौंदर्य देखते हुए, लता-मंडप से आगे बढते हुए श्रीराम को पैंजनियों की छुन-छुन आवाज सुनायी दी। श्रीराम ने तत्क्षण लक्ष्मण से कहा, ''लक्ष्मण सावधान! लगता है कामदेव विश्व-विजय की कामनता से अपना रथ हमारी ओर ही ले आ रहे हैं।'' ऐसा कहते कहते श्रीराम लता-मंडप से बाहर आये। अपनी सखियों समेत पुष्प-वाटिका में गौरी पूजन के लिए आयी सीता ने राम को देखा। राम ने सीता को देखा। और दोनों एक-दूसरे को .... देखते ही रहे। दोनों को उस समय ऐसा लगा जैसे दोनों का खोया हुआ खजाना ही उनके हाथ लग गया है। कुछ समय बाद सखियों ने सीता से कहा, ''गौरी-पूजा के लिए विलंब हो रहा है। जल्दी चलिए।'' सखियों के साथ गौरी-पूजा के लिए जाते जाते श्रीराम को मुड मुड कर देखने का लाभ सीता टाल नहीं सकी।

कल राम-लक्ष्मण के नगर प्रवेश के समय की एक सखी की बतायी हुई बात सीता को बार-बार याद आ रही थी। राम-लक्ष्मण का अनुपम सौंदर्य देखकर वह सखी सुध-बुध खो बैठी। राम-लक्ष्मण के सौंदर्य की खुशी की खबर देने के लिए वह दौडती हाँफती सीता के पास आयी; परंतु राम-लक्ष्मण के सौंदर्य को वह शब्दों में व्यक्त कर नहीं सकी। बस! वह इतना ही कह पायी, ''मैं उन सुंदर राजकुमारों के सौंदर्य का वर्णन कर आपको बताना तो चाहती हूँ; पर 'गिरा अनयन, नयन बिनु बानी।' मेरी आँखों ने उन सुंदर राजकुमारी का सौंदर्य तो देख लिया; पर उस सौंदर्य का वर्णन कर बताने के लिए मेरी आँखो में जीभ नहीं है। उसी तरह मेरी जीभ उन राजकुमारों के सौंदर्य का वर्णन करना तो

चाहती है; पर मेरी जीभ में उस सौंदर्य को देखने के लिए आँखे नहीं हैं।''

सखी के इस उत्तर से सीता की तृप्ति नहीं हुई थी; पर उन दोनों राजकुमारों को देखने की इच्छा अधिक तीव्र हुई। आज अचानक उन दोनों राजकुमारों का सौंदर्य देखकर सीता बाग-बाग हो गई। अब सीता को अपने पिता पर क्रोध आने लगा। मेरे स्वयंवर के लिए उन्होंने शिव-धनुष्य में प्रत्यंचा लगाने की शर्त रखी ही क्यों? अगर रावण जैसा दस मुखों और बीस हाथोंवाला कोई राजा या राजपुत्र अपनी असीम शक्ती से शिवधनुष्य में प्रत्यंचा लगाने में सफल बनता है तो मुझे मजबूरन उसके गले में वरमाला डालनी होगी।

इस विचार से सीता चिंताक्रांत हुई। पुष्पवाटिका में गौरी-पूजा के लिए सखियों समेत आयी हुई सीताने गौरी माता से प्रार्थना की कि कल स्वयंवर के समय श्रीराम ही शिवधनुष्य में प्रत्यंचा लगाने में सफल हो रावण या कोई अन्य राजा राजकुमार सफल न हो।

दूसरे दिन स्वयंवर के मंडप में दूर-दूर से आये हुए राजा और राजकुमार सीना तानकर अकडकर बैठे हुए थे। हरएक को ऐसा लग रहा था कि शिवधनुष्य में प्रत्यंचा लगानेमें वही सफल बनेगा और स्वयंवर की माला सीता उसीके गले में डालेगी।

शिवधनुष्य में प्रत्यंचा लगानेका खेल सीता बचपन से ही खेलती आयी थी। परंतु आज सीता जैसी अनुपम सुंदरी को पाने के लालच में शिवधनुष्य में प्रत्यंचा लगाने के लिए न केवल रावण; बल्कि अन्य अनेक जो भी आये शिवधनुष्य में प्रत्यंचा लगाने में सफल नहीं बने।

सभा-मंडप में सभी उपस्थितों में सन्नाटा छा गया। अनेक वीरों की हुई दुर्दशा को देख राजा जनक ने क्रोध से पूछा, ''अरे क्या यह पृथ्वी वीर-विहीना हो गई है? मेरी बेटी बचपन से ही इस शिव-धनुष्य के साथ खेला करती थी। प्रत्यंचा लगाया करले थी। आज उसे शिव-धनुष्य में प्रत्यंचा लगानेका काम कोई भी राजा या राजपुत्र कर नहीं सका! क्या यह धरती वीर-विहीन हो गयी हैं?''

राजा दशरथ के इस वक्तव्य की मीठी मार से लक्ष्मण तिलमिला उठे। तपाक के साथ वे उठ खडे हुए और कहने लगे, ''हे मेरे बडे भैय्या! इस पृथ्वी को कंदुक (गेंद) के समान फेंकने की आप में शक्ति है; पर तब भी आप चुप क्यों बैठे हैं? उठिए और उस शिव-धनुष्य में प्रत्यंचा लगाइये।'' लक्ष्मण के इस कथन के बाद श्रीराम उठे। उन्होंने अपने गुरू विश्वामित्र को प्रणाम किया। उनके आशिर्वाद और सम्मति प्राप्त की। राम आगे बढे, शिव-धनुष्य को उन्होंने प्रथम प्रणाम किया, उठाया। उसमें प्रत्यंचा लगाने की उन्होंने कोशिश की। पर तभी वह प्रत्यंचा टूट गयी। सारी सभा ने तालियों की कडकडाहट से श्रीराम की प्रशंसा की।

बड़ी प्रसन्नता से सीता ने श्रीराम के गले में वरमाला पहनाई। सीता की मनोकामना सफल हुई।

जोड़ रहे हैं भारत

सुंदर प्यारा देश हमारा
यहाँ की धरती है खुबसूरत
ऐसे देश में निगम हमारा
हम, जोड रहे है भारत

शहर, गाँव हो या हो देश का कोना-कोना
सबको आपस में जोडे ये तो हमने जाना।

'सेवा' ही है लक्ष्य हमारा
हम कर रहे है सच्ची मेहनत
भारत संचार निगम हमारा
हम, जोड रहे है भारत।

सबकी भाषा, प्रांत अलग-अलग हो, मिटा रहे हर दूरी
सबको आपस में जोडे करें जरूरत पुरी।

'सबसे आगे' निगम हमारा
यही है सबकी चाहत
अपनों को अपनों से जोडे
हम, जोड रहे है भारत।

श्रीमती एम. एम. बिवलकर
(सि.टी.ओ.ए.(जी), दापोली

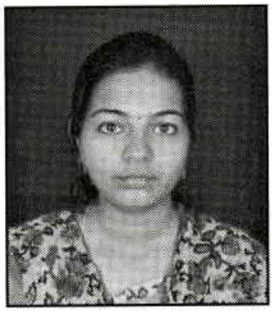

शुभांगी अनंत कंजार
बैंक ऑफ महाराष्ट्र
राजापूर शाखा

मैं पृथ्वी बोल रही हूँ।

मै पृथ्वी! जी हाँ मै पृथ्वी बोल रही हूँ।
'समुद्रवसने देवी पर्वतस्तनमंडले
विष्णुपत्नी नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे।

ऐसी आप मेरी कृतज्ञता से क्षमायाचना करते है। पृथ्वीही सब प्राणीमात्रों का आधार है, सबका भार सह लेती है, ऐसा कहते है। पर अब मानव को मेरी कोई पर्वा नही है। उसे लगता है, मानव ने प्रकृति और मुझ पर कब्जा कर लिया है। पर ये गलत है।

'पृथ्वी सगन्धः सरसस्तथापः
स्पर्शश्च वायुः ज्वलनं सतेजः
नभः सशब्द महताम् सदैव
कुर्वन्तुसर्वे मम सुप्रभातम्।'

प्राचीन लोगों ने पृथ्वी, वायु, नभ, जल और सूर्यप्रकाश का महत्व जान लिया था, इसलिए वो अपने दिन की शुरुआत इससे करते थे। वो प्रकृति को गुरू मानते है।

वराह पुराण में एक श्लोक कहता है - 'जब तक इस जमीन पर पर्वत, बन, सरोवर है, तब तक आप, आपके बच्चे भावी पिढियाँ सुख से रहेंगे।' पर विज्ञान तंत्रज्ञान के मार्ग पर चलता हुआ मानव इन चीजों को भूल गया और प्रकृति पर कब्जा करने की भाषा करने लगा। अब इसके गंभीर परिणामों को भुगतने का वक्त आ गया है। पर्यावरण का महत्त्व जान लेना और उसका संतुलन रखना जरुरी है। वो आपकी जिम्मेदारी है।

ओझोन परत में छिद्र (Ozone Depletion)

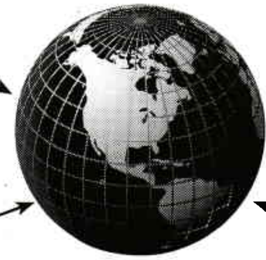

वनस्पती सूर्य से उर्जा प्राप्त कर वहाँ भक्षक के वहाँ विघटक के पास और विघटक से फिर से वातावरण संक्रमित होती है।

ये पिरॅमिड पर्यावरण का संतुलन आवश्यक है ये दिखाता है।

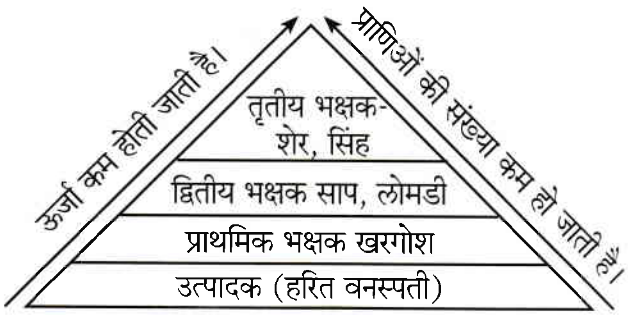

इस पिरॅमिड में हरित वनस्पती की संख्या सबसे ज़्यादा होती है। बाद में प्राथमिक भक्षक, द्वितीय, तृतीय भक्षक यहाँ ये संख्या कम हो जाती है। मतलब समझो, अगर शेरों की संख्या बढ गई तो खरगोश, हिरण खत्म हो जायेंगे और उनको (शेरों को) खाने को कुछ बचेगा नहीं। और शेरों की संख्या कम हो गई तो खरगोश, हिरणे जैसो की संख्या बढ जायेंगी और उनको खाने को कुछ बचेगा नहीं। इसलिये इस पिरॅमिड का संतुलन रखना महत्वपूर्ण है। इससे एक भी घटक कम या ज़्यादा हो गया तो पर्यावरण का संतुलन बिघड जायेगा इसलिये पर्यावरण संतुलन में सभी का सहभाग महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण प्रदूषित होने का मुख्य कारण है - जनसंख्या में वृद्धी। बढती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संपत्ती कम पड़ रही है। रोटी, कपडा और मकान जैसी प्राथमिक सुविधाएँ पूरी हो नहीं पा रही है। निरक्षरता भी एक प्रमुख कारण है।

हवा प्रदूषण :

वाहनों से निकला कार्बन मोनॉक्साईड (CO), कारखानों से सल्फरडाय ऑक्साईड, नायट्रोजन डायऑक्साईड ज्वलन से निकला धुवां हवा मे मिल जाते है और हवा प्रदूषित हो जाती है।

रशिया मे चेर्नोबिल में हुआ अपघात विनाशकारी था। वहाँ जो विस्फोट हुआ उससे किरणोत्सारी धूल के बादल फैल गये। ये बादल रशिया के युक्रेन, बायलो इन शहरों में पहुँच गये, जो कि इन दोनों शहरों में धान का उत्पादन ज़्यादा होता है। ज़्यादा तापमान से कॉंक्रिट के रस्ते पिघल गये। डेन्मार्क जैसे दूर के देश को भी इसके परिणाम भुगतने पडे। ऐसे ही 2 दिसंबर 1984 की रात भोपाल में MIC वायू हवा मे फैल गया और हजारो लोंगो की जाने गयी। अनेक अपंग हो गये।

प्रदूषण :

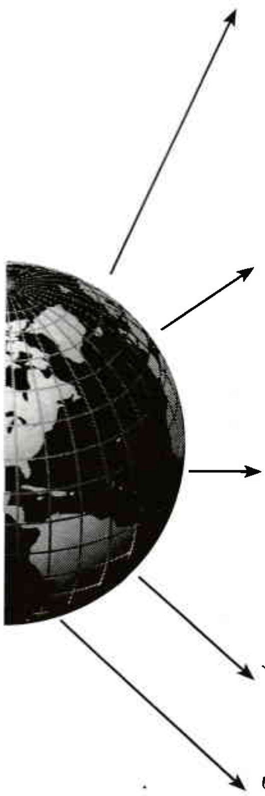

१) हवा प्रदूषण - कारण कारखानों से निकला SO2, NO2, वाहन, ज्वलन, CFC (क्लोरोफ्लुरोकार्बन), वन तोड़ रासायनिक किटकनाशक, किरणोत्सर्गी घटक, कोहरा.

२) जल प्रदुषण - कारखानों से / घरों से निकला मल जल, रासायनिक खात / किटकनाशक उष्मा, मानव की आदते.

३) भूमी प्रदूषण - नागरी / औद्योगिक कारखानों से निकला कचरा, मल जल, रासायनिक उर्वरक / किटनाशक

४) ध्वनी प्रदूषण - वाहन, यंत्रों से निकली आवाजें, पटाखे, मेघगर्जना

५) अवकाश प्रदूषण - मनुष्यनिर्मित यान, रॉकेटस्

जल प्रदूषण :

21 जून 2006 के दिन कोल्हापुर-महाराष्ट्र के समाचार पत्र में एक खबर थी के 'रंकाळा' तालाब में प्रदूषण ने हद पार कर ली है और ऑक्सिजन की कमी से तालाब की हजारों मछलियां धराशाही हो गयी। तालाब में फैले जलपर्णी के कारण मछली को प्रर्याप्त ऑक्सिजन नहीं मिल पाया।

ऐसी ही एक बात है - मुंबई में मिठी नदी के मुख के पास समुंदर के पानी में मिट्टी भर जमीन तैयार की गई और उस पर बड़ी इमारतें बनाई गई। फिर नदी से आए हुए पानी को समुंदर में जाने का कोई मार्ग उपलब्ध नहीं रहा। इसका परिणाम 26 जुलाई

2006 को मुंबई के लोगों को भुगतना पड़ा।

'जलति जीयति लोकनिती' :

ऐसे संस्कृत में कहा जाता है। आप लोगोंकी हरकतों से यही पानी अब जीवन है या मृत्यू का कारण है यह सवाल हमारे सामने उपस्थित होता है।

ओझोन परत में छिद्र (Ozone Depletion) :

ओझोन सब सजीव के लिए महत्वपूर्ण वायु है। मेरे पृष्ठभाग से १६-२३ कि.मी. चारों ओर इसका आवरण है। ये सुरक्षा कवच का कार्य करता है। ओझोन सूर्य की पराबैगनी (अल्ट्राव्हायोलेट) किरणों को ग्रहण करके आपको संरक्षित रखता है। पर अब प्रदूषण के कारण इस आवरण को छिद्र पड़ गया है। इसे नियंत्रित नहीं किया गया तो मानव जात को हानिकारक परिणाम झेलने होंगे, धूप तेज हो जाएगी, तापमान असह्य हो जाएगा, अनेक प्रकार के रोग हो जायेंगे।

हरितगृह परिणाम (Green House Effect) :

मेरी चारों ओर का (CO_2) कार्बन डाय ऑक्साईड और अन्य वायु का आवरण हरितगृह के काच जैसा काम करता है। प्रदूषण से कार्बनडाय ऑक्सॉईड CFC का प्रमाण बढ़ने लगा है। सूर्य से निकली अतिनील किरणें इस आवरण से मेरे पृष्ठभाग तक पहुँचती है और वातावरण में वापस नहीं लौटती है। इसका परिणाम मेरा तापमान बढ़ जाएगा तापमान बढ़ जाने से वैश्विक तापमान वृद्धी जैसे परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

'वैश्विक तापमान वृद्धि' अब सबसे बड़ी समस्या बन गई है। इससे मेरे उत्तर और दक्षिण ध्रुव में जो बर्फ है वो पिघल जायेगा और समुंदर का पानी बढ़ जायेगा। वहाँ रहनेवाले लोगों की बस्ती में पानी घुस जायेगा।

आम्ल वर्षा (Acid Rain) :

औद्योगिक कारखानों से निकला सल्फर, नायट्रोजन हवा में मिल के उनके ऑक्साईडस् बन जाते हैं। जब बारीश होती है, तब इस SO_2 / NO_2 की पानी से रासायनिक अभिक्रिया होती है और उसका रुपांतर आम्ल (ॲसिड) में होता है। इसे आम्ल वर्षा कहते है।

$$2\,SO_2 + O_2 \longrightarrow 2SO_3$$

(सल्फर डाय ऑक्साईड) → (सल्फेट)

↓ हवा में से ऑक्सिजन

$$SO_3 + H_2O \longrightarrow H_2SO_4$$

सल्फेट + पानी (बारीश का) → सल्फ्युरिक आम्ल

अब आप लोगों को सुखचैन से रहना है तो पर्यावरण का संतुलन रखना, उसकी रक्षा करना आपका कर्तव्य है। इसके लिए अपने कायदे कानून बनाये है पर उनका आचरण और उनपर अंमल नहीं हो रहा है।

PUC टेस्ट, दूषित पानी की समस्या, सौर ऊर्जा का प्रयोग, इसपर ध्यान देके 'विशुद्ध पर्यावरण' रखना आवश्यक है। मैने तो बस कह दिया, अभी मुझको और खुदको बचाना आप लोगों के हाथ में है।

भावपूर्ण श्रद्धांजली।

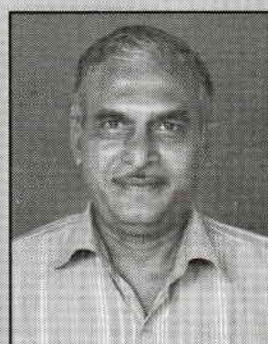

सदस्य कार्यालय दूरदर्शन के
कार्यालय प्रमुख **एस. बी. भोसले** जी का
दि. ३१ मार्च २००९ को आकस्मिक निधन हुआ
उन्हे समिती द्वारा श्रद्धांजली अर्पित करते है।

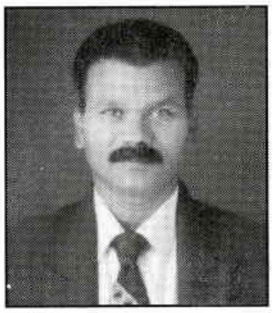

प्रा. डॉ. शाहू दशरथ मधाळे
हिन्दी विभाग अध्यक्ष,
गोगटे जोगळेकर महाविद्यालय,
रत्नागिरी

वन संपदा संपन्न राज्यों का महत्त्व

पर्यावरण संतुलन की बिगड़ती स्थिति आज पूरी दुनिया के लिये गंभीर चिंता का विषय है। इसीलिए संयुक्त राष्ट्रसंघ दुनिया भर के देशों को प्रकृति से अनावश्यक छेड़छाड़ के बारे में सचेत करते हुए बची खुची वन संपदा के संरक्षण के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। इसके लिए वन संरक्षण और संवर्धन कार्यक्रमों के लिये राष्ट्रसंघ आफ्रिका और दक्षिण अमेरिका महाद्वीपों के देशों को विशेष आर्थिक सहायता भी दे रहा है। लेकिन भारत में वन संपदा संपन्न राज्य देश के पर्यावरण संरक्षण की खातीर अपने वनक्षेत्रों को बचाये रखने की किमत अपने विकास को अवरुद्ध रखकर चुका रहे हैं। भारत सरकार अभी तक वनों के महत्त्व के प्रति अपेक्षा भाव ही प्रदर्शित करती रही है। आखीर वन संपदा संपन्न राज्यों का कसूर क्या है? उनका कसूर यही है कि उन्होंने कभी भी अपने वन क्षेत्रों से होनेवाले राष्ट्रीय हितों के आर्थिक महत्त्व को समझा नहीं और भारत सरकार को समझाया नहीं।

आजादी के समय भारत का कुल वन क्षेत्र, देश के क्षेत्रफल का 33 प्रतिशत था। लेकिन आजादी के बाद जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, औद्योगिक एवं कृषि क्षेत्र में विकास, शहरीकरण, विभीन्न विकास परियोजनाओं के कारण वन क्षेत्र में पिछले 50 वर्षों में काफी कमी आई है। वर्तमान में भारत में कुल भूमि का 19.47 प्रतिशत भाग ही वनाच्छादित है। वनों की दृष्टि से देश में स्थिती बड़ी ही असंतुलित है। क्योंकि हिमालय पर्वत के क्षेत्रों, पश्चिमी तटवर्ती क्षेत्र, पश्चिम बंगाल का पूर्वी तटवर्ती क्षेत्र और मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उड़ीसा, केरल, आंध्रप्रदेश राज्यों के भीतरी क्षेत्र में ही पर्याप्त वन क्षेत्र शेष बचे हैं। जिन राज्यों में पर्याप्त वन क्षेत्र हैं, वे आर्थिक दृष्टी से और विकास की दृष्टी से गरीब और पिछड़े राज्यों की श्रेणी में आते हैं। जब की जिन राज्यों में वन क्षेत्र बहुत कम बचे हैं, वे राज्य कृषि, उद्योग, व्यापार आदि गतिविधियों में प्रगति करने के कारण विकसित और सम्पन्न हो गये हैं। वनों के कारण विकास का यह संतुलन विचारणीय है। क्योंकि वन संपदा संपन्न राज्यों ने अपने विकास को अवरुद्ध रख वनों को बचाये रखा है और ये वन देश में पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने में प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप से अमूल्य योगदान दे रहे हैं। फिर भी भारत सरकार को इन राज्यों के आर्थिक हितों की कोई परवाह नहीं है, जिससे इन राज्यों की जनता में असंतोष और क्षोभ होना सहज ही है।

पिछले 50 वर्षों में हरियाणा और पंजाब में कृषि क्षेत्र में तथा औद्योगिक क्षेत्र में सराहनीय प्रगति हुई है। इस प्रगति के कारण इन राज्यों में भूमि का मूल्य काफी अधिक है। लेकिन दूसरी ओर इन राज्यों में वन क्षेत्र चिंताजनक रुप से बहुत कम बचा है। हरियाणा में कुल भूमि का एक प्रतिशत और पंजाब में कुल भूमि का केवल तीन प्रतिशत हिस्सा ही वनाच्छादित रह गया है। इसी प्रकार संपन्न राज्य गुजरात में वनों का क्षेत्रफल केवल 6 प्रतिशत ही है। राष्ट्रीय औसत 19.42 प्रतिशत से कम वन क्षेत्र प्रतिशत वाले राज्य हैं। आंध्र प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, उत्तर प्रदेश, प. बंगाल, राजस्थान और जम्मू कश्मीर। जो राज्य राष्ट्रीय औसत से अधिक वनक्षेत्र वाले हैं, उनमें हिमाचल पर्वत के राज्य मुख्य हैं। ये राज्य हैं, मिज़ोराम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मणीपूर, त्रिपुरा, मेघालय, सिक्कीम और असम। इन राज्यों में 30 से 89 प्रतिशत भूमि वनाच्छादित है। आवागमन और परिवहन सुविधाओं की कमी, दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र, कठोर जलवायू और आजिविका के साधनों के अभाव के कारण इन राज्यों में वन्य क्षेत्रों में जनसंख्या का दबाव न होने के कारण ही वनक्षेत्र सुरक्षित बचे हुए हैं। लेकिन त्रिपुरा और असम में जनसंख्या वृद्धी और कृषि तथा औद्योगिक विकास के कारण वनक्षेत्र तेजी से कम हो रहा है। वर्तमान में असम में कुल भूमि का 30 प्रतिशत और त्रिपुरा में 53 प्रतिशत भू-भाग ही वनाच्छादित है।

छत्तीसगढ़ सहित मध्यप्रदेश में जनसंख्या का दबाव बढ़ा है। विशेषकर पड़ोसी राज्यों से रोजी-रोटी के लिये पलायन करनेवाली जनसंख्या के कारण इन राज्यों की कृषि भूमि और शहरों में जनसंख्या दबाव पिछले 50 वर्षों में दो गुना बढ़ा है। कृषि भूमि में विस्तार, उद्योग, खनन, बिजली और सिंचाई परियोजनाओं के साथ-साथ शहरीकरण की प्रक्रिया में तेजी के कारण भी राज्यों के वनक्षेत्रों में कमी आई है। इसके अलावा इंधन और निर्माण कार्यो के लिए लकड़ी की आपूर्ती के राष्ट्रीय दायित्व को पूरा करने के लिये भी इन राज्यों को अपने मूल्यवान वनक्षेत्रों की बली चढ़ानी पड़ी है। यही हाल उड़ीसा का है।

1980 के वन संरक्षण कानून और वन्य प्राणी संरक्षण संबंधी अन्तरराष्ट्रीय एवम् राष्ट्रीय बंधनों के कारण छत्तीसगढ़ सहित मध्यप्रदेश को संरक्षित वनों और वन्य प्राणी अभयारण्यों के लिये विशाल वन क्षेत्र बिना किसी उपयोग के सुरक्षित रखना पड़ा है। इससे वनों की सुरक्षा तो हुई है, लेकीन इन वनक्षेत्रों के निवासियों के पुनर्वास और उनकी रोजी-रोटी की समस्या से राज्य सरकार को ही निपटना पड़ता है। इस ओर भारत सरकार ने कभी उदारता से ध्यान नहीं दिया। अन्तरराज्यीय जल परियोजनाओं,

विद्युत परियोजनाओं, सुरक्षा प्रतिष्ठानों, सैनिक छावनियों और निर्यात के लिये तथा देश की औद्योगिक आवश्यकताओं के लिये खनन परियोजनाओं में भी मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के वनक्षेत्रों का भारी विनाश हुआ है और हो रहा है। इस विनाश की ओर केंद्र सरकार का ध्यान नहीं है।

विगत कुछ वर्षों से पानी की समस्या अन्तर्रराजीय विवादों को जन्म दे रही है। वर्तमान में देश का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो, जहाँ पानी को लेकर विवाद न हो। हाल ही कावेरी जल विवाद को लेकर कर्नाटक और तमीलनाडू के बीच जो तनाव निर्मित हुआ, वह सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद भी शांत नहीं हुआ है। कारण स्पष्ट है कि कोई भी राज्य अपने हितों की बली देकर दूसरे राज्य के हितों का पोषण करने को तैयार नहीं है। केंद्र सरकार भी इस विवाद में इसी कारण असहाय बनी रही। इसी तरह पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान के बीच नदियों के पानी को लेकर ही विवाद चल रहे हैं। पानी प्रकृति की अमूल्य देन है। इसका कोई विकल्प नहीं है। देश में जनसंख्या बढ़ने के कारण पानी की समस्या दिनोंदिन गंभीर हुई है और आने वाले समय में और भी गंभीर हो सकती है। लेकिन पानी से ज्यादा जरुरी है - प्राण वायु और शुद्ध पर्यावरण। यदि खेती और उद्योग के जरिये हमने आर्थिक विकास के उन्नत शिखर छू भी लिये और पर्यावरण संतुलन की उपेक्षा की, तो क्या बिना शुद्ध पर्यावरण और प्राणवायु के मानव जीवन संभव है? इस गंभीर प्रश्न पर समय रहते विचार कर लेना चाहिए। दुनिया में तो इस पर चिंता होने लगी है, लेकिन खेद है कि हमारे देश में अभी पर्यावरण को लेकर चिंता केवल सरकारी संगोष्ठियों और मंत्रालयों के कामकाज तक ही सीमित है। पर्यावरण संतुलन के लिये वनों के महत्त्व को समझाने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी पिछले 50 वर्षो में देश में बड़ी मात्रा में वनक्षेत्र उजड़ गये है। अब जो वनक्षेत्र बचे हैं, उनकी सुरक्षा और नये वन लगाने के लिए सरकार को ध्यान देने की जरुरत है। इसके लिये भारत सरकार को सबसे पहले वन संपदा वाले राज्यों को प्रोत्साहन देने के लिये उन्हें विशेष आर्थिक अनुदान और सहायता देने की निश्चित नीति पर विचार करना चाहिए। मध्यप्रदेश और वनसंपंदा वाले दूसरे राज्य आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहे हैं। उन पर भारत सरकार और लोक ऋण का भी भारी बोझ है। कहीं ऐसा न हो, की आर्थिक संकट से उबरने के लिये यह राज्य अपने कीमती वनक्षेत्र काट कर कर्ज चुकाने पर मजबूर हो जाये।

वन, भौतिक रुप से इंधन और विभिन्न निर्माण कार्यों के लिये लकड़ी देने के साथ साथ अनेक प्रकार की उपयोगी वन-ोपज, औषधी-वनस्पती और उद्योगों के लिये आवश्यक कच्चा माल तो देते ही हैं लेकिन परोक्ष रुप से वन मिट्टी संरक्षण, जल पुनर्चक्रण, जलवायु नियंत्रण, प्रदूषण से बचाव, धूल, आँधी की रोकधाम, बाढ़ों की रोकधाम, अनावृष्टी तथा अतिवृष्टी पर नियंत्रण, वन्य प्रजातियों का आश्रय, पर्यावरण संतुलन, कार्बनडाय ऑक्साईड और नायट्रोजन चक्र नियंत्रण, हरितिमा संवर्धन की अमूल्य और विकल्पहीन सेवायें भी देते है। प्राणवायू (ऑक्सिजन) समस्त जड़ चेतन जगत की जीवनशक्ति है, जो वनों के अस्तित्व के बल पर ही है। क्या इतने उपयोगी वनों का कोई आर्थिक मूल्य नहीं है। वन वैज्ञानिक बताते हैं कि लगभग 50 टन भार वाले एक सामान्य वृक्ष अपने जीवनकाल से विनाश तक (लगभग 50 वर्ष) वातावरण में ऑक्सिजन प्रदान कर मिट्टी का क्षरण रोखकर, फल-फूल तथा चारा-पत्ती देकर, प्रोटीन का उत्पादन कर तथा पर्यावरण कम करके लगभग 15 लाख 80 हजार रुपये का आर्थिक लाभ देता है। इस दृष्टी से मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की वन संपदा का आर्थिक मूल्य लगभग 50 हजार अरब रुपयों से भी अधिक का आंका गया है। इतनी अमूल्य संपदा के रखरखाव और संरक्षण के लिये भारत सरकार को वनसंपदा वाले राज्यों को प्रति वर्ष उनके आयोजना व्यय के लिये लगभग एक हजार करोड़ रुपयों का अतिरिक्त अनुदान देना चाहिए, जिससे कि वे देश में पर्यावरण संतुलन के लिये निरंतर काम करते रहने के लिये प्रोत्साहन पा सकें और वन संपदा की सुरक्षा करते हुए विकास की दौड़ में अन्य राज्यों के साथ-साथ कदम बढ़ा सकें।

व्यक्तित्त्व का विकास :

प्रा. राहूल मराठे, लांजा

आकर्षक व्यक्तित्त्व होना यह एक प्राकृतिक वरदान होता है, लेकिन उसे बरकरार रखना अपने हाथ में है। "आज हर एक व्यक्ति को लगता है कि उसका व्यक्तित्त्व आकर्षक हो, यह जागरुकता देखकर खुशी होती है, प्रसन्नता होती है, हर एक व्यक्तिद्वारा व्यक्तित्त्व विकास के लिए किये गये प्रयास के प्रतिफल को देखना यह एक आनंददायी अनुभव है। उसके लिये अट्टाहास या आग्रह करेंगे तो उसके दुष्परिणाम अलग देखने को मिलेंगे. इसलिये स्वयं के क्षम ताओं का, मर्यादाओं, गुण तथा अवगुणों को विश्लेषण या अवलोकन करना बहुत आवश्यक है। तद्नुसार प्रयास करने चाहिए.

वर्तमानकाल में या प्रतियोगिता के इस विश्व में व्यक्तित्त्व विकास की आवश्यकता है, इसलिए हम पहले इस संकल्पना पर विचार विर्मश करेंगे।

व्यक्तित्व क्या है?

'व्यक्तित्व" इस शब्द के लिए अंग्रेजी में Personality शब्द का प्रयोग किया जाता है, Personality शब्द Persona इस लैटीन शब्द से बना है, इसका अर्थ होता है Mask I Mask याने नकाब । ग्रीक रंगमंच पर ग्रीक कलाकार अपने चेहरेपर नकाब डालकर दूसरे व्यक्ति की नकल करते थे। वैसे ही समाज में रहते, आदमी कई नकाब डालकर घूमता है, इसी कारण लोगों को उसकी असलीयत पहचानना मुश्किल ही होता है।

हम जब समाज में रहते है तो हर एक व्यक्ति का शारीरिक रुप अलग देखने को मिलता है। उसी में से कई सुंदर एवम् आकर्षक शरीरयष्टी के मिलेंगे उसपर हमारा मन आकर्षित होता है उसके बाह्य रूप का प्रभाव हमपर पड़ता है और हम उससे अभिभूत व प्रभावित होते हैं। लेकीन जितना महत्व शरीरयष्टी को है उतना ही महत्व कपडों की रंग संगती, बालों की रचना, उसका चाल-चलन आदि को भी बाह्य रूपों पर है। इससे भी ज़्यादा ध्यान हमें आंतरिक गुणों का विकास करने के पर होना चाहिए तभी ही हम सर्वांगसुंदर व्यक्तिमत्त्व विकास कर सकते है। निम्न कुछ बातों पर ध्यान देना जरुरी है।

मन के सामर्थ्य को पहचानो :

प्रत्येक आदमी को एक अलौकिक ऐसा मन होता है. इस मन का सामर्थ्य पहचानने में आदमी कम पड़ता है। वह मन के बारे में उपरी तौर पर विचार करता है, ऐसा न करके मन के अस्तित्व का अध्ययन करना चाहिए। आपको एक अनोखी बात सुनने को मिलती होगी "मैं मन में जब कार्य करने का तय करता हूँ तो वह किये बिना मुझे चैन की नींद नहीं आती"।

जब भी हम कोई कार्य करने का निश्चय करते हैं तो वह कार्य किए बिना हमारा मन चैन की साँस नहीं लेता.

इस संवाद में आप देखेंगे ''मन में निश्चय किया तो'' इन शब्दों से हमे कार्य पूरा करने की शक्ति या प्रेरणा मिलती है हम वह कार्य पूरा करते हैं।

हमारी सकारात्मक सोच तथा नकारात्मक सोच यह मन के खेल है, यह मानते है तो नकारात्मक सोच को कभी भी अपने जीवन में प्रवेश नही करने देना है। जब अपना मन क्रियाशील, ध्यैर्यशील, विनयशील बनता है तो, अपना अंतरंग खिलेगा और व्यक्तित्व सह्य और सुंदर बनेगा, इसमें कृत्रिमता नजर नहीं आयेगी।

खुदकी पहचान महत्त्वपूर्ण :

'मन' के सामर्थ्य के साथ साथ स्वयं की पहचान होनी जरूरी है। अपनी क्षमताओं की, मर्यादाओं की परख होनी चाहिए और मर्यादाओं को, क्षमताओं में बदलने का प्रयास करना होगा, खुद में रहे अच्छे गुण-बुरे गुण, गुण अवगुणों का एहसास या परिचय होने के बाद बुरे या अवगुणों से दूर रखकर अच्छाई को बढ़ावा देना चाहिए।

''मै डरता नहीं'' ऐसा कहते है, लेकिन जब किसी कार्य में असफल होते हैं, तो असफलता के डर से घबरा जाते है, इस तरह अपनी क्षमताओं का परिचय कर लेना चाहिए या मर्यादाओं का एहसास होना चाहिए। अपने में से दोनों का प्रयास करके दूर रखना चाहिए।

आत्मविश्वास :

किसी भी व्यक्ति को अपनी क्षमता का परिचय होता है तो वह कोई भी कार्य आत्मविश्वास, लगन से करता है।

वैसे देखा जाय तो आत्मविश्वास एक स्तर तक योग्य होता है, व्यक्ति का आत्मविश्वास ढ़ल जाता है तो उसके मन में न्यूनता की भावना निर्माण होती है या आत्मविश्वास अधिक होता है तो अहं की बाधा होती है। इसलिए दोनों स्तर का आत्म विश्वास उस व्यक्ति को अंतर बाह्य अकार्यक्षम बना देता है।

अध्ययन से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है, जैसे कि डायरी लिखना, चिंतन करना, जो अपने कर्तव्य में जो कमियाँ है उसे धीरे-धीरे कम करना, आदि से खुद का विश्वास बढ़ जाता है। मन के संकल्प के प्रति दृढता आ जाती है।

सकारात्मक सोच :

असफलता / असमर्थता के प्रति व्यक्ति कोई ना कोई बहाना बनाता है, या उसका निराकरण करता रहता है। तब से वह नकारात्मक सोच की ओर अपनी यात्रा का प्रारंभ करता है, यही विचार / सोच उनके सकारात्मक सोच के लिए हानिकारक होते है। विचारशक्ति क्षीण होती है, इसके विपरित परिणाम मन पर होते हैं। इसलिए अच्छे गुणों का विकास करने के लिए अथक प्रयास की जरुरत होती है।

नकारात्मक सोच की व्यक्ति सवालों को निर्माण करता है, सकारात्मक सोच का व्यक्ती उन सवालों के जवाब ढूँढता है। नकारात्मक सोच असफलता के बहाने बनाता रहता है तो सकारात्मक सोच के व्यक्ति की कार्यक्षमता बढ़ती है। इसलिए किसी भी समस्या की ओर देखने का अंदाज सकारात्मक होना चाहिए। आपको छोटीसी बात बताता हूँ ''एक छोटे से गाँव से एक युवक कॉलेज की शिक्षा लेने के लिए हर रोज 8 कि.मी. पैदल आता था। दूसरा कोई होता तो कॉलेज जाना ही छोड़ देता, लेकिन उस युवक ने इसी कमजोरी का फायदा उठाया और अपनी कमजोरी का परिवर्तन आत्मिक शक्ति के रुप में किया। उसने अपने में पैदल चलने की आदत डाल दी, और इस सकारात्मक सोच से अपने इच्छित कार्य की पूर्ति की।

मनुष्य के जीवन में आनंद तत्काल निर्माण करने की ताकद सकारात्मक सोच में होती है।

संवाद कौशल्य :

व्यक्तित्व का दर्पण संवाद कौशल्य होता है। बातचीत आदमी के व्यक्तिमत्त्व को सुंदर बनाती है, आकर्षक बनाती है। अपनी बातचीत का प्रभाव दूसरों पर पडना चाहिए ऐसा हर एक को लगता है और उस दिशा में प्रयास करना महत्त्वपूर्ण है। संभाषण कौशल्य के लिए यथोचित भाषा का ज्ञान आवश्यक होना चाहिए। भाषा पर हर किसी का प्रभुत्व होना चाहिए। स्वरों को आरोह-अवरोह और व्याकरण की अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

दूसरों की बात अच्छी तरह से सुनकर अपने विचार स्पष्ट

एवं संक्षिप्त रुप में प्रस्तुत करने की आदत व्यक्ति को आवश्यक है। अपने मन में चल रहे विचारों का असर अपनी बात पर होता है। इसलिए मन में चल रहे विचारों में अस्पष्टता है तो उसका बुरा असर अपनी बात पर होता है। मन आनंदी होता है तो अपनी बातचीत पर उसका अच्छा असर दिखायी देता है।

बात में स्पष्टता, नि:संदिग्धता हो और बात संक्षिप्त शब्दों में प्रस्तुत होनी चाहिए। भाषा में सहजता होनी चाहिए न कि अलंकरण। संप्रेषण में बाधा निर्माण न हो, इसलिए हर रोज संवाद, सुसंवाद करने का प्रयास होना चाहिए। व्यक्ति को भाषा का अध्ययन और निरीक्षण की कुशलता आवश्यक है।

उपरोक्त बातों के साथ व्यक्तित्व निर्माण में निम्न बातों का भी प्रभावी असर होता है। वह है अनुवंशिकता, गुण, प्रतिभा, शरीर, उँचाई, बालों का रंग, आँखें, बुध्दि आदि। इसी मर्यादा में रहकर बाह्य परिस्थिति को ध्यान में रखकर निरंतर प्रयास से अपने व्यक्तित्व में बदल किया जा सकता है।

व्यक्तिमत्त्व विकास यह एक निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है। सतत बाह्य परिस्थिति का अध्ययन करते अंतर्मुख ग्रहणता से व्यक्तित्व का विकास अवश्य होता है।

रत्नागिरी दर्शन

संकलन

चंद्रकांत सावंत
बैंक ऑफ़ इंडिया
आडिवरे शाखा

शिरिष उकिडवे
बैंक ऑफ़ इंडिया
नेवरे शाखा

लोकमान्य टिळक जन्मस्थल :

''स्वराज यह मेरा जन्मसिद्ध अधिकार हैं और मैं उसे हासिल करके ही रहूँगा।'' ऐसी सिंह गर्जना करनेवाले बाळ गंगाधर टिळकजी ने अंग्रेजी सत्ता को हिलाकर रख दिया। इस स्वातंत्र्यवीर के जन्मस्थल को रत्नागिरी में 'राष्ट्रीय स्मारक' के रूप में जाना जाता है और यह स्थल रत्नागिरी बसस्टेशन से 1.5 कि.मी. दूरी पर है।

थिबा पॅलेस :

ब्रह्मदेश का राजा थिबा को अंग्रेजों ने रत्नागिरी में नजरकैद में रखने का निर्णय लिया था। राजा को रखना है तो उसके लिए राजभवन का निर्माण किया गया। उसे ''थिबा पॅलेस'' के नाम से जानते है। इस में पुरातत्त्व विभाग का कार्यालय तथा वस्तुसंग्रहालय है। बसस्टेशन से 2 कि.मी. अंतर पर यह थिबा पॅलेस है।

भाट्ये :

बस स्टेशन से चार किलोमीटर पर स्थित भाट्ये गांव उसके विस्तीर्ण सागर तट और सुरू वृक्ष के बन के कारण सैलानियों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। इस छोटे से गाँव में कोंकण कृषि विद्यापीठ का नारियल संशोधन केंद्र है। जहाँ पर अनेक प्रकार की प्रजाति के नारियल की पैदाइश, उनका संवर्धन तथा क्रय-विक्रय भी होता है।

रत्नदूर्ग किला :

मराठा साम्राज्य के जनक शिवाजी छत्रपति ने बहुत से किलों का निर्माण किया। अरबी सागर के किनारे पर स्थित इस पहाड़ पर अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए रत्नदूर्ग किले का निर्माण किया। इस किले के तीनों ओर से सागर तो एक ओर से रत्नागिरी नगर का आरंभ। इस किले में भगवती माँ का मंदिर है, इसलिए इस रत्नदूर्ग को भगवती किला के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ एक तट पर दीपस्तंभ है। बस स्टेशन से 5 कि.मी. दूरी पर यह स्थान है।

महाकाली का मंदिर – आडिवरे :

रत्नागिरी से 35 कि.मी. महाकाली का मंदिर है। महाकाली का यह बहुत पुराना मंदिर है। इसवी सन 1200 वर्ष पूर्व आद्यशंकराचार्यजी ने स्थापना की है। ऐसा उल्लेख किया जाता है। इसकी एक छोटी कहानी है। आडिवरे गाँव से 5 कि.मी. दूर स्थित वेत्ये गाँव के सागर में महाकाली की मूरत मिली है। ऐसा उल्लेख किया जाता है कि, वेत्ये गाँव मच्छलियाँ पकड़नेवले भंडारी समाज के लोग हर रोज मछली पकड़ने जाते थे एक दिन पानी में जाल फेंका था वह उपर नही आ रहा था, सभी ने जाल खींचने का प्रयास किया लेकिन कोई उपयोग नहीं हुआ। तभी सभी ने जलदेवता की आराधना की तभी रात में गाँव मूल पुरुष के सपने में जाकर कहाँ कि मैं महाकाली हूँ मुझे उपर ऊठा लीजिए। तो दुसरे दिन सभी मच्छीमार सागर तटपर गए और प्रार्थना की जाल उपर उठा लिया तो देवी की काली शिल की मूरत दिखाई दी और उसे गाँव के सबलोग बड़े आनंद से लेकर आए। आज भी इस गाँव के सब लोग महाकाली के छाया में आनंद से रहते है।

श्री क्षेत्र परशुराम :

भृगु कुल के वंशज जिनका शस्त्र परशु और नाम राम महान तपस्वी को भगवान परशुराम के नाम से जाना जाता है। वह भृगु कुल के भार्गवराम नाम से भी परिचित है। उनके इस गाँव में उनका मंदीर भी है। रत्नागिरी से यह क्षेत्र 95 कि.मी. की दूरी पर है।

कसबा संगमेश्वर :

रत्नागिरी से 40 कि.मी. दूरी पर मुंबई-गोवा महामार्ग पर स्थित इस गाँव में पांडवकालीन कर्णेश्वर, सप्तेश्वर, संगमेश्वर, सोमेश्वर, विश्वेश्वर आदी नाम से परिचित भगवान शिवजी की शिवालयें है। इस स्थान पर राजा शिव छत्रपती के महाप्रतापी बेटे शंभू राजे (संभाजीराजे) की समाधि है।

डेरवण :

मुंबई-गोवा महामार्ग पर सावर्डे गाँव से 4 कि.मी. दूरी पर वालावलकर ट्रस्ट द्वारा निर्मित राजा शिवाजी की जीवनी पर आधारीत शिवशिल्प सृष्टी है। यहाँ का हर शिल्प सजीव लगता है। इस स्थान के निकट ही ट्रस्ट का एक बड़ा धर्मार्थ अस्पताल भी है। रत्नागिरी से इस की दूरी लगभग 60 कि.मी. है।

दशभूजा गणेश – हेदवी :

गुहागर तहसील में स्थित हेदवी ग्राम दशभूजा गणेश के नाम से परिचित है। रत्नागिरी से 160 कि.मी. दूरी पे स्थित इस गाँव के गणेश जी की मूर्ती काश्मिर में बनवाकर यहाँ लाकर इस मंदिर में स्थापित की गई है। हर मास के संकष्ट चतुर्थी को यहाँ भक्तों की भीड़ होती है।

प्राचीन कोकण :

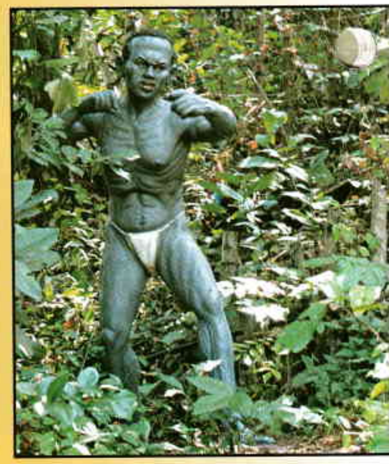

रत्नागिरी से 35-40 कि.मी. दूरी पर गणपतीपुळे तीर्थ के नजदीक ही यह एक अनोखा संग्रहालय या म्युझियम है। प्राचीन कोंकण टुरिझम डेव्हलपमेंट अँड रिसर्च सेंटर ने इसका निर्माण किया है। यह निर्माण करने के लिए 3 एकड़ जमीन का उपयोग किया और इस में 500 साल पुराने कोंकणी देहात की प्रतिकृतियाँ निर्माण की गयी है और पुरानी यादों को उजागर कर दिया गया है।

हम प्रवेश करते है वहाँ से ही आपको प्राचीन कोंकण की झलक मिलेगी। प्रवेशद्वार गुफा से बनाया और यहाँ आनेवालों का स्वागत गाईड से होता है। हम जैसे आगे जायेंगे वैसे वैसे ग्रामदेवता, कोकण भूमी के निर्माता परशुराम, छ. शिवाजी महाराज के सैन्यदल की जानकारी, ऐतिहासिक घटनाओं को सामने खड़ा करनेवाले सागरी युद्ध में महत्त्वपूर्ण स्थान निभानेवाली युद्धनौका दिखाई देगी।

उसके बाद कोंकणी मनुष्य का जीवन, उसी समय की समाज रचना पर आधारित विविध दृश्यों, ग्राम व्यवस्था, ग्रामीण व्यवसाय, उनके घर, वेशभूषा, गाँव का खेत, किसान, लुहार, कुम्हार, चमार, आदी। आगे बड़े पहाड से नीचे गिरनेवाले पानी को देख दिल ठंडा हो जाता है। हजारो साल पुराने औषधी वृक्षों की जानकारी मिल जाती है। आगे हम बांस की सिढी से ऊपर चढते है तो वहाँ से अथांग महासागर का मनोहारी दृश्य दिखायी देता है और मन भावविभोर हो जाता है।

विश्रांती स्थल पर हम जब पहुँचते है तो हमें कोंकणी खाद्यात्र मिलेंगे, यहाँ बनाए गये वस्तूओं को खरीदने का मन करता ही है। अलविदा कहने से पहले हमें दर्शन होता है हनुमान जी का, दर्शन के साथ अलविदा करने के लिए देसाई परिवार आपके साथ रहता है। प्राचीन कोकण पर्यटकों का लुभावना स्थान बन गया है।

मार्लेश्वर :

सह्याद्री पर्वत शिरनदी में बसा हुआ यह भगवान शंकरजी का मंदिर एक गुफा में है। शिवभक्तों का यह आदरणीय स्थान रत्नागिरी से 60 कि.मी. दूरी पर है। वर्षा के मौसम में पहाड़ की ऊँचाई से गिरनेवाले प्रपात से यहाँ का परिसर बहुतही लुभावना एवं नयनरम्य हो जाता है। मकर संक्राती के दिन यहाँ मेले का आयोजन किया जाता है।

कोळीसरे :

गणपतीपुळे मार्ग पर ही रत्नागिरी से 40 कि.मी. दूर यह गाँव लक्ष्मी केशव मंदिर के लिए मशहूर है। इस मंदिर में चार भुजा वाली भगवान विष्णू की भव्य मूर्ती है।

अठारह हाथों का गणेश :

सिर्फ रत्नागिरी ही नहीं तो सारे कोंकण की आराध्य देवता गणेश, गजानन। रत्नागिरी एवं पास-पड़ोस के परिसर में अनेक गणेश जी के मंदीर है लेकीन १९६७ में निर्मित अठारह भुजा के गणेश जी का मंदीर अनोखा है। यह मंदिर पतित पावन मंदीर के निकट है।

पतित पावन मंदिर :

स्वातंत्र्यवीर सावरकर जी ने रत्नागिरी में अस्पृश्यता निवारण का महान कार्य किया। उनकी प्रेरणा से रत्नागिरी में पतित पावन मंदिर का निर्माण किया गया है। इस मंदिर के नजदीक सावरकर जी का पूर्णाकृती पुतला है। यह स्थान रत्नागिरी बस स्टेशन से 1.5 कि.मी. दूरी पर है।

पावस :

रत्नागिरी से 20 कि.मी. दूरी पर स्थित यह स्थान वहाँ के गणेश मंदिर, विश्वेश्वर मंदिर, सोमेश्वर मंदीर के कारण दर्शनीय है। वैसेही स्वामी स्वरुपानंद जी की समाधि से प्रसिद्ध है। 15 अगस्त 1974 को स्वामीजी ने समाधि ले ली। वहीं पर एक भव्य मंदिर का निर्माण किया गया।

गणपती पुळे :

सामने अथांग महासागर, स्वच्छ और साफ सुथरा 4 से 5 कि.मी. का लंबा बीच, आस-पास को घने पेड़ और इतना बड़ा मनोहारी दृश्य, सागर स्नान और साथ में श्री गणेश जी का दर्शन हो जाय तो पर्यटकों के साथ गणेश भक्तों के लिए भी यह दुगनी खुशी होती प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लूटने का यह स्थान गणपतीपुळे तीर्थक्षेत्र।

गणपतीपुळे तीर्थक्षेत्र रत्नागिरी से 35 कि.मी. दूरी पर सागर तट पर बसा है। यह मंदिर का पहाड़ का हिस्सा है। श्री गणेश जी स्वयंभू पहाड़ में ही प्रकट हुआ पवित्र स्थान है। पूरे पहाड़ को ही गणेशजी का निराकार रूप माना जाता है। और पहाड़ की परिक्रमा की जाती है। परिक्रमा के लिए 15 से 20 मिनट का समय लगता है। मुदगल पुराण में इस स्थान का उल्लेख लंबोदर विनायक ऐसा किया गया है। इस पवित्र स्थान को भारत का पश्चिम द्वार पालक भी माना जाता है।

गणेशजी के मंदिर में पारंपारिक सभी उत्सव मनाये जाते हैं। यहाँ भक्तों को रहने के लिए भक्त निवास की तथा पर्यटकों के लिए एम.टी.डी.सी. आवास तथा खान पान की सुविधा है।

गणपतीपुळे में सागर स्नान और सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य एक अनोखा क्षण होता है।

जयगड :

कोंकण के समुद्री तट पर एक सुरक्षित बंदरगाह यह है जयगड की असली पहचान। शास्त्री नदी के मुख के करीब स्थित जयगड किले के कारण इस बंदरगाह को जयगड नाम से पहचाना जाता है। विजापूर के बादशाह ने इस किले का निर्माण किया। छत्रपती शिवाजी महाराज के सेनानी कान्होजी आंग्रे के कब्जे में यह किला था। रत्नागिरी से लगभग ३५-४० कि.मी. दूर है।

वेळणेश्वर :

गुहागर तहसील में प्रकृति के नयनरम्य सौंदर्य से भरपूर इस गाँव में एक शिवालय है। अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण आज यह एक पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली

कोंकण पर्यटन के लिए मशहूर है वैसा ही यहाँ के किसान एवं सागरी जीवनयापन की भी कुछ अलग विशेषताएँ है। यहाँ के मानवी जीवन में सुधार लाने में दापोली कोंकण कृषि विद्यापीठ का बड़ा योगदान है। निसर्ग पर निर्भर रहनेवाले किसानों का जीवन कठिन एवं कष्टमय होता ही है फिर भी यहाँ के लोग आनंदी और उत्साही हैं। किसानों के यही कष्टमय जीवन को दूर करने के लिए कोंकण कृषि विद्यापीठ द्वारा विविध अध्ययनों तथा संशोधनों से किसानों की आर्थिक प्रगति करने का प्रयास जारी है। दापोली कोंकण कृषि विद्यापीठ की स्थापना 36 वर्ष पूर्व 18 मई 1972 में हो गयी बाद में 12 फरवरी 2001 में डा. बाळासाहब सावंत कृषि विद्यापीठ ऐसा नामकरण किया गया।

यह कृषि विद्यापीठ कृषि शिक्षा तथा कृषि में संशोधन का कार्य करता है। नयी नयी प्रजाति की पैदास करना, ग्रामीण क्षेत्र के किसानों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन करना, ग्रामीण एवं शहरी बेरोजगारों के लिए रोजगार उपलब्ध करने में मदद करना, कृषि में यांत्रिकीकरण के प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन देना तथा विविध संशोधन करना, मत्स्य विद्या प्रभाग द्वारा मत्स्य व्यवसाय करनेवालों को मार्गदर्शन करके प्रेरित करना आदी कार्य किया जाता है।

यह विद्यापीठ केवल कोंकण के लोगों के लिए नहीं बल्की पूरे देश के लिए कार्य करता है। आप अवश्य विद्यापीठ से भेंट करें तभी आपको कई अलग विशेषताएँ देखने को मिलेगी और आप धन्य हो जायेंगे।

चिंचखरी :

रत्नागिरी से 3 कि.मी. के दूरी पर स्थित यह गाँव अपने प्राकृतिक सौंदर्य तथा वहाँ के जागृत देवस्थान के कारण मशहूर है। समाज के सर्वांगीण विकास का व्रत लिए हुए वेदशास्त्री देव-धर्माभिमानी सिद्धपुरुष श्री गजानन महाराज बोरकर जी ने आयु के केवल 30 वर्ष में यहाँ के प्रसिद्ध दत्तमंदिर का निर्माण किया।

कऱ्हाटेश्वर :

एक ओर सागर की विशाल लहरें उनके मार्ग में दीवार बने पहाड़ पर टकराकर अपनी असीम शक्ती का प्रदर्शन करती हुई, तो दूसरी ओर अपने स्थान पर अडिग चट्टान लिए खड़ा पहाड। इसी चट्टान में पौराणिक शैली से निर्मित लकडी का शिलाहारकालीन कऱ्हाटेश्वर मंदिर। सब कुछ आश्चर्यचकीत कर देनेवाला रोमांचक नज़ारा जयगड से 4-5 कि.मी. दूरी पर है।

मालगुंड : कवि केशवसुत स्मारक

प्राकृतिक सौंदर्य से भरा, स्वच्छ एवं सुंदर सागर किनारे पर बसा मालगुंड गाँव जिसे ऐतिहासिक स्थान का महत्त्व है। मराठी साहित्य प्रेमीओं का श्रद्धास्थान तथा कवी केशवसुत का यह जन्मस्थान। हाल ही में यहाँ पर उनका एक स्मारक का निर्माण साहित्य प्रेमीओं द्वारा किया गया है। रत्नागिरी से 35 से 40 कि.मी. दूरी पर बसे इस गाँव में 15 मई 1866 में मराठी भाषा के महान कवि केशवसुत (कृष्णाजी केशव दामले) जी का जन्म हुआ। स्वातंत्र्य पूर्वकाल के इस कवि ने देशप्रेमियों को प्रेरणा देने के लिए काव्य का लेखन किया और ग्रामीण इलाके में रहनेवाली प्रजा के हालात को समाज के सामने लाने का प्रयास किया। अपनी अलौकिक प्रतिभा से काव्य का निर्माण किया उनके साहित्य का अध्ययन आज भी किया जा रहा है। मालगुंड शिक्षण संस्था ने एक एकड़ का भूखंड देकर स्मारक बनाने में बड़ा योगदान दिया है। गणपतीपुळे से यह स्थान केवल 2 कि.मी. दूरी पर है।

आंजर्ला :

दापोली तहसील से 20 कि.मी. दूरी पर समुद्री तट पर यह गाँव बसा हुआ है। यहाँ का गणेश मंदिर ऊँचे चट्टान पर स्थित है। इस मंदिर के सामने एक सुंदर सा मीठे पानी का तालाब है। इस बहुत ही पुराने मंदिर का पुन:निर्माण 1780 में किया गया।

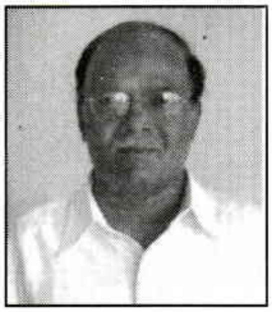

श्री. के. टी. राऊत
बैंक ऑफ़ इंडिया
अग्रणी जिला प्रबंधक
रत्नागिरी

वित्तीय समावेशन

आर्थिक एवं सामाजिक विषमताएँ दुनिया के सभी देशों में देखने को मिलती हैं। आकार की विशालता के कारण हमारे देश में यह समस्या गंभीर है। गरीबी एवं आर्थिक असमानता को कम करने के लिए जिस साधन पर इन दिनों सबसे अधिक जोर दिया जा रहा है वह है वित्तीय समावेशन. हमनें देश में हरित क्रांति एवं दूध क्रांति महसूस की लेकिन वित्तीय समावेशन तो एक संपूर्ण क्रांति साबित हो जायेगी।

वित्तीय समावेशन का पहला प्रमुख प्रयास बैंकों का राष्ट्रीयकरण था। इस क्रांति का उद्देश ही बैंकिंग सुविधा का विस्तार ग्रामों तक करना और विशेषकर किसानों, शिल्पकारों, लघु उद्यमियों तथा ग्रामीण निर्धन आबादी को भी बैंकिंग सुविधा उपलब्ध करना था। बैंको के राष्ट्रीयकरण से पूर्व जहाँ देश भर में सरकारी क्षेत्र के बैंकों की कुल 6000 बैंक शाखाएं थी, वहीं राष्ट्रीयकरण के बाद आज इन शाखाओं की कुल संख्या बढकर 70000 से भी ज़्यादा हो गयी है। राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकिंग सरकारी नियंत्रण के अधीन आ गया, उन्हें सामाजिक उत्थान का दायित्व सौंपा गया और भारतीय बैंकिंग ''वर्ग बैंकिंग'' से ''जन बैंकिंग'' के रूपमें परिणत हो गया। फिर भी सद्यस्थिति में भारत में प्रत्येक 100 वयस्क जनसंख्या के पीछे बैंक खातों की संख्या लगभग 59 है, जबकि ब्रिटेन में ये संख्या 90 है। 69% भारतीय आबादी अभी भी बैंकिंग सेवाओं से वंचित है। देश की आबादी का लगभग 70% अभी भी गांवों में निवास करता है। आज भी भारतीय जनसंख्या का काफी हिस्सा गरीबी रेखा के नीचे विपन्नता में जीवन-यापन कर रहा है। अभी भी बैंकिंग सेवाएं केवल समाज के कुछ वर्गों तक सीमित रही हैं ।

वित्तीय समावेशन से तात्पर्य है आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को वहन करने योग्य लागत पर वित्तीय सेवाओं की सुपुर्दगी। इसका आशय उन लोगों को वित्तीय सेवाएं (बीमा, पेन्शन, बैंकिंग सेवाएं) उपलब्ध कराने से है जिन्हें औपचारिक वित्तीय प्रणाली का लाभ नहीं मिल पाता है।

वित्तीय समावेशन प्रक्रिया के चरण हैं -

1) बैंकों को गांवों का आबंटन
2) घरेलू परिवारों के सर्वेक्षण
3) वित्तीय समावेशन की आवश्यकता का मूल्यांकन
4) वित्तीय समावेशन के अंतर्गत दिये जानेवाले उत्पादों की पहचान

इस प्रक्रिया के मुख्य अवयव हैं -

1) शून्य अथवा न्यूनतम शेष के साथ बचत खाता खोलना
2) वैयक्तिक उपयोग के लिये लघु ओवर ड्राफ्ट सुविधा या सामान्य क्रेडिट कार्ड
3) अन्य गतिविधियों के लिये किसान क्रेडिट कार्ड, किसान समाधान कार्ड, आर्टिजन क्रेडिट कार्ड, स्वरोजगारी क्रेडिट कार्ड आदि
4) स्वास्थ्य बीमा कवर
5) लचीले आधार पर पुनर्भुगतान किये जानेवाले अल्पकालीन ऋण

> "मुझसे यह बर्दाश्त नहीं होगा कि, हिन्दुस्थान का एक भी आदमी मातृभाषा को भूल जाए, उसकी हँसी उडाएँ या उससे शर्माए या उससे यह लगे कि वह अपने विचार अपनी भाषा में नहीं रख सकता।"
>
> **- महात्मा गांधी**

वित्तीय समावेशन के दो महत्त्वपूर्ण मॉडल है -

1. **बिजनेस फैसिलिटेटर मॉडल** - इस मॉडल के अंतर्गत बैंक एन.जी.ओ. किसान क्लब, सहकारी संस्था, डाकघर, बीमा एजंट, पंचायत ग्राम ज्ञान केंद्र, कृषि क्लिनिक। बिजनेस केंद्र, खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, रिटायर्ड स्टाफ सदस्य, अन्य व्यक्ति इत्यादी माध्यमों का प्रयोग किया जा सकता है। इनके द्वारा निम्न प्रकार की सेवाएं ली जा सकती हैं -

1) बैंकिंग सेवाओं तथा अन्य उत्पादों के बारे में जानकारी देना तथा ऋण परामर्श जैसी सेवाएं देना।
2) उधारकर्ताओं की पहचान और योजनाओं की उपयुक्तता
3) आवेदन पत्र एकत्रित करना तथा उनकी प्रारंभिक प्रोसेसिंग करके बैंकों को प्रस्तुत करना।
4) स्वयंसहायता समूहों, संयुक्त देनदारी समूहों का संवर्धन एवं विकास तथा मॉनीटरिंग करना।
5) अनुवर्ती कार्यवाही तथा वसूली करना।

2. **बिजनेस करसपोंडेंट मॉडल** - इस मॉडल के अंतर्गत बैंक प्रतिष्ठित, विश्वसनीय एनजीओ या वित्तीय संस्था को तथा डाकघर इत्यादी को बिजनेस करसपोंडेट का कार्य करने के लिए नियुक्त किया जा सकता है और उनको निम्नलिखित कार्य दिये जा सकते है -

1) छोटे ऋणों का वितरण
2) छोटी-छोटी जमाओं का संग्रहण
3) मूलधन या अतिदेय राशिकी वसूली
4) लघु बीमा, अन्य तृतीय पक्ष के उत्पादों की बिक्री
5) अन्य भुगतानों की प्राप्ति एवं प्रदायकता।

> "मेरी आँखे वह दिन देखने को तरस रही हैं, जिस दिन कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक ही भाषा बोली जाएगी और वह है हिन्दी।"
>
> **- स्वामी दयानंद सरस्वती**

श्री. श्रवणकुमार शर्मा
(उप प्रबंधक)
बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र,
रत्नागिरी शहर शाखा

करेले की सब्जी

कभी-कभी रोजमर्रा की बातचीत में हम कई बातें बस यूँ ही कह दिया करते हैं, लेकिन गहराई में जाएँ तो मानव मन की जटिलताओं का अहसास होने लगता हैं। ऐसा ही एक अनुभव मैं सभी के साथ शेयर करना चाहता हूँ।

एक दिन लंच-टाईम में मैं रोटी के साथ करेले की सब्जी खा रहा था। मेरे दोस्त ने पूछा :

''तुम्हें करेले की सब्जी पसंद है?''
''नहीं!'' मेरा जवाब था।
''फिर खा क्यों रहे हो?''
''क्योंकि सेहत के लिए अच्छी है। खून साफ करती है।''
''इतनी अच्छी है तो फिर पसंद क्यों नहीं करते हो?''
''इसका स्वाद कडवा होता है, इसलिए।''
''फिर यह अच्छी कैसे हुई?''
''क्योंकि यह अच्छी है।''
''हद है यार!''

बातचीत यहीं खत्म हो गई, लेकिन बाद में कई दिनों तक मैं इसके बारे में सोचता रहा। मेरा दोस्त कहना क्या चाहता था? वह कहना चाहता था कि यदि करेले की सब्जी अच्छी है तो वह मुझे पसंद होनी चाहिए और यदि वह मुझे पसंद नहीं है तो वह अच्छी हो ही नहीं सकती।

मैं इसे जरुरी नहीं मानता, क्योंकि दोनों अलग बातें हैं। जब मैं किसी वस्तु-विशेष के गुण-दोषों का विवेचन करता हूँ, तो मेरा दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ होता है, जब मैं निर्णायक की भूमिका में होता हूँ तो तटस्थता और निरपेक्षता पहली आवश्यकता होती है। यानि कि वस्तु-विशेष के गुण-दोष विवेचन के क्रम में मेरी व्यक्तिगत राय आड़े नहीं आनी चाहिए। यह एक आदर्श स्थिति है, लेकिन व्यावहारिक जीवन में मनुष्य के लिए पूरी तरह वस्तुनिष्ठ होना संभव नहीं है। पर इतनी वस्तुनिष्ठता तो आवश्यक है कि हम तथ्यों को झूठलाएँ नहीं और न ही तोड़े-मरोड़ें।

करेले का कडवापन उसकी प्रवृत्ति है, उसका दोष नहीं हैं। इसी कडवेपन के कारण करेला रक्तशोधक का कार्य करता है। इसी कडवेपन के कारण मैं करेले को नापसंद करता हूँ। लेकिन अपनी नापसंद को जायज़ ठहराने के लिए मैं करेले के स्वास्थ्यवर्धक गुणों की अवहेलना नहीं कर सकता। यदि करूँगा तो इससे मेरी विश्वसनीयता कम होगी।

दूसरी ओर जब मैं किसी वस्तु के बारे में अपनी पसंद या नापसंद ज़ाहिर करता हूँ तो मेरा दृष्टिकोण विषयनिष्ठ होता है। तब मैं वस्तु-विशेष के बारे में नहीं, अपने बारे में राय दे रहा होता

हूँ। मेरी पसंद या नापसंद - वस्तु-विशेष कैसा है? - इस प्रश्न का उत्तर नहीं है, बल्कि वस्तु-विशेष मुझे कैसा लगता है, इस प्रश्न का उत्तर है। वस्तु-विशेष मुझे कैसा लगता है - यह तय करने में वस्तु के गुण-दोषों के साथ मेरा व्यक्तित्व, मेरे पूर्व अनुभव, मेरे विचार, मेरी भावनाओं के साथ कई बाह्य परिस्थितियाँ भी काम कर रही होती हैं।

इसलिए मेरी (या किसी की भी) पसंद या नापसंद तय करने में वस्तु के गुण-दोषों की भूमिका सापेदिक दृष्टि से बहुत कम हो जाती है। इसलिए किसी चीज में हजार खुबियाँ हों फिर भी मैं उसे नापसंद कर सकता हूँ और किसी चीज में हजार खामियाँ हों फिर भी मैं उसे पसंद कर सकता हूँ। फिर यह भी तय है कि मेरा किसी चीज को पसंद करना उसके अच्छे होने की गारंटी नहीं है और न ही नापसंद करना उसके बुरे होने की गारंटी है।

इसलिए मैं कहता हूँ कि करेले की सब्जी मुझे 'पसंद' नहीं है, लेकिन सेहत के लिए 'अच्छी' है, इसलिए मन मार कर ही सही, खाता हूँ।

बिखरती बूँदों सी हँसी,
बारिश में धुली पाक सी हँसी,
गुमसुम सिमटते होठों की हँसी,
खनकती हँसी,
सबसे अलग सी हँसी,
तुम्हारी हँसी।

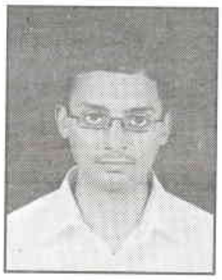

सुदर्शन कुमार
बैंक ऑफ महाराष्ट्र, राजापूर शाखा

हिन्दी अंकों का शब्द स्वरूप

1.	एक	36.	छत्तीस	71.	इकहत्तर
2.	दो	37.	सैंतीस	72.	बहत्तर
3.	तीन	38.	अड़तीस	73.	तिहत्तर
4.	चार	39.	उनतालीस	74.	चौहत्तर
5.	पाँच	40.	चालीस	75.	पचहत्तर
6.	छः	41.	इकतालीस	76.	छिहत्तर
7.	सात	42.	बयालीस	77.	सतहत्तर
8.	आठ	43.	तैंतालीस	78.	अठहत्तर
9.	नौ	44.	चवालीस	79.	उन्नासी
10.	दस	45.	पैंतालीस	80.	अस्सी
11.	ग्यारह	46.	छियालीस	81.	इक्यासी
12.	बारह	47.	सैंतालीस	82.	बयासी
13.	तेरह	48.	अड़तालीस	83.	तिरासी
14.	चौदह	49.	उनचास	84.	चौरासी
15.	पन्द्रह	50.	पचास	85.	पचासी
16.	सोलह	51.	इक्यावन	86.	छियासी
17.	सत्रह	52.	बावन	87.	सत्तासी
18.	अठारह	53.	तिरपन	88.	अठासी
19.	उन्नीस	54.	चौवन	89.	नवासी
20.	बीस	55.	पचपन	90.	नब्बे
21.	इक्कीस	56.	छप्पन	91.	इक्यानवे
22.	बाईस	57.	सत्तावन	92.	बानवे
23.	तेईस	58.	अठ्ठावन	93.	तिरानवे
24.	चौबीस	59.	उनसठ	94.	चौरानवे
25.	पच्चीस	60.	साठ	95.	पिचानवे
26.	छब्बीस	61.	इकसठ	96.	छियानवे
27.	सत्ताईस	62.	बासठ	97.	सत्तानवे
28.	अट्ठाईस	63.	तिरसठ	98.	अठ्ठानवे
29.	उनतीस	64.	चौसठ	99.	निन्यानवे
30.	तीस	65.	पैंसठ	100.	सौ
31.	इक्तीस	66.	छियासठ		
32.	बत्तीस	67.	सड़सठ	1,000	हजार
33.	तैंतीस	68.	अड़सठ	1,00,000	
34.	चौंतीस	69.	उनहत्तर		लाख
35.	पैंतीस	70.	सत्तर		

सौ. मृणाल अनिल जोशी
बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र,
दापोली शाखा

पू. साने गुरुजी

कै. पांडुरंग सदाशिव साने उपाख्य साने गुरुजी का जन्म 24 दिसंबर 1899 इसवी में जिला रत्नागिरी तथा तहसील दापोली के पालगड जैसे छोटे देहात में हुआ। सामान्य आर्थिक हालात में उन्हें शिक्षा लेनी पडी। 1918 मे मॅट्रिक तथा यथावकाश उन्होंने एम.ए. पास किया। बाद में वे खानदेश एज्युकेशन सोसायटीके अमळनेर स्थित प्रताप हाईस्कूल में अध्यापक के नाते सेवा करने लगे। वहीपर उन्होंने ''छात्रालय' नामक हस्तलिखित शुरू किया। उनकी कलम तलवार का काम करती थी। नंयी पिढी का निर्माण करने हेतु वे निरंतर लिखते ही रहे। फलस्वरूप एक सौ पचीस ग्रंथों का निर्माण हुआ। आशुतोष मुकर्जी, शिशिरकुमार घोष, रवींद्रनाथ टागोर जैसे बांगला, तिरुवल्लीवर, डॉ. राधाकृष्णन जैसे दक्षिण भारतीय विद्वान, इसके सिक, टॉलस्टॉय, भगिनि निवेदिता, महात्मा गांधी, कृष्णा हाथीसिंग, जवाहरलाल नेहरू जैसे साहित्यकारों के साहित्य का अनुवाद भी किया। इसके अलावा पाश्चात्य और भारतीय साहित्यकारों के साहित्य का अनुवाद भी किया। यह सभी मराठी में, ''गोड गोड गोष्टी'' के नाम से अनुवादित है। 'पत्री' उनका अपना कविता संग्रह है। ''श्यामची आई, धडपडणारी मुले, पुनर्जन्म, आस्तिक, श्याम (खंड 1, 2, 3) क्रांती (खंड 1, 2), गोड शेवट, तीन मुले, नव प्रयोग'' जैसे उपन्यास का भी लेखन किया। गोड निबंध, भारतीय संस्कृती, सुंदर पत्रे जैसे स्फूट लेखन भी लिखा। उनका साहित्य, जीवन निष्ठा, आचार-विचार, राष्ट्र तथा समाज निर्माण के लिए प्रेरणादायी था। पाठकोंके मनमें 'नैतिकता' का निर्माण और बढावा ही उनके साहित्य का

मूल्य था। वे मातृ हृदय के कवी थे। उनके रोमरोम, कणकण में लोकोत्तर काव्य की प्रतिभा थी जो तुलसीदास, मीराबाई, कबीर, ज्ञानेश्वर, तुकाराम जैसे कविओं के जीवन और काव्यमें थी। काव्य उनका श्वास-उच्छ्वास था। माँ की दृष्टी से वे संसार की ओर देखा करते थे। उनके अत:करणमें माँ का वात्सल्य था। जनता की नि:स्वार्थ सेवाही आपका जीवन था। इन वृत्तियों से भरा उनका काव्य था। उनका सामर्थ्य उनके आंसूओं मे था। आँसू उनका नारायण था। इसी विश्वास से ही उन्होंने पंढरपूर स्थित विठ्ठलमंदिर अस्पश्यों के लिए खुला करने हेतु यशस्वी अनशन किया। यह सृष्टी परमेश्वर निर्मित एक महाकाव्य है और हर एक मानव उसका अंश है और यही मानव विषमता, अधमता और कुरुपता से अलग हो, सुंदर, स्वतंत्र हो यही उनकी सर्वश्रेष्ठ कामना थी।

आज पालगड स्थित उनका निवासस्थान उनका स्मारक बन गया हैं। साथ ही वडघर जिला रायगड प्रेमी ने उनका राष्ट्रीय स्मारक निर्माण किया है। जिसे उनके साहित्य प्रेमी और पर्यटक भेंट कर रहे हैं और उनके कार्य को सन्मानित कर रहे हैं।

शुद्ध निर्हेतुक, आत्यंतिक प्रेम यही जीवन की प्रेरणा थी। 11 जून 1950 उन्होंने जीवन की अंतिम साँस ली। उनके कृतार्थ जीवन को मेरा और देशवासियों का विनम्र प्रणाम।

राजभाषा संबंधी आदेशों की मुख्य बातें जिनका अनुपालन सभी कार्यालय अवश्य प्रमुख करें

- नगर राजभाषा कार्यान्वय समिति की बैठकों में कार्यालय प्रमुख अवश्य जाए।
- प्रत्येक तिमाही में कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की एक बैठक अवश्य आयोजित करें।
- कार्यालय प्रमुख राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में स्वयं उपस्थित हो।
- प्रत्येक तिमाही के अंत में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित प्रगति रिपोर्ट ०८ दिन के अन्दर मुख्यालय भेजें।
- स्वयं हिन्दी में कार्य कर अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को अभिप्रेरित करें।
- प्रति वर्ष सितम्बर माह में हिन्दी सप्ताह का आयोजन करें।
- कृपया सुनिश्चित करें कि आपके कार्यालय का नाम - पट्ट, रबड की मोहरों, पत्र-शीर्ष, सील व विजिटिंग कार्ड द्विभाषी हों व सभी सूचना - पट्ट द्विभाषी हों।
- कार्यालय के अप्रशिक्षित अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिन्दी/हिन्दी टंकण व हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण की व्यवस्था कक्षरें।
- फाईलों पर सभी टिप्पणियां हिन्दी में ही लिखें व हस्ताक्षर हिन्दी में करें।
- राजभाषा अधिनियम, 1963 व राजभाषा नियम, 1976 की अद्यतन जानकारी रखें व राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 के अनुसार इनका पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करें।
- कार्यालय में हिन्दी पत्रिकाएं, पुस्तकें व समाचार पत्र उपलब्ध कराएं।
- हिन्दी में सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों की ए.सी.आर. रिपोर्ट में इसकी प्रविष्टि करें।
- विभागीय प्रशासनिक बैठकों की कार्यसूची व कार्यवृत्त द्विभाषी तैयार करें।

■ संकलन ■

श्री. मोहन भावे
बैंक ऑफ़ इंडिया

क्रांतीसूर्य स्वातंत्र्यवीर सावरकर

कै. विनायक दामोदर तथा स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी का स्वातंत्र्य समर मे क्रांतिकार्य, मार्सेलीस बंदरगाह में उनकी ऐतिहासिक छलांग, उनका अंदमान का कारावास और उनका लिखा हुआ साहित्य आदि सभी बाते भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के लगभग सभी जानकारों को ज्ञात है। लेकिन रत्नागिरी-वासियोंको के लिए उनके समाज सुधार संबंधी कार्य ज़्यादा महत्त्व रखता है।

सन 1924 में सावरकरजी को रत्नागिरी में स्थानबद्ध किया गया। तभी से लेकर सन 1937 तक उनका रत्नागिरी में ही निवास रहा। अंग्रेजोंके खिलाफ कोई राजनीतिक आंदोलन खडा करनेपर सरकारने उनपर पाबंदी लगाई थी। इस अवसर का फायदा उठाते हुए सावरकरजी ने अपना चिंतन जारी रखा। अपना देश पारतंत्र होने के कारणों की जड़ तक जाने का उनका यह प्रयास था। उसके फलस्वरूप उन्होने समाज सुधार का कार्य हाथ में लिया।

समाज को एक शृंखला में बांधने के लिए उस समय की छूआ-छूत का गंदा चलन एक बड़ी बाधा थी। जंजीर की ताकद उसके कमजोर कड़ी से नापी जाती है, इस सिद्धांत पर सावरकरजी विश्वास रखते थे। समाज में ऐसी कमजोर कड़ी रह न जाय इसके लिये सावरकरजी ने कमर कसी। समाज के कुछ दलितों को मंदिर प्रवेश की अनुमति नहीं थी। भगवान की पूजा करना तो बहुत दूर की बात थी। इसपर हमला बोलते हुए सावरकरजी ने रत्नागिरी के पुराने प्रसिद्ध विठ्ठल मंदिर में संघर्ष किया। उसमें उन्हें कुछ सफलता तो मिली, लेकिन इस पर उनका समाधान नहीं हुआ, इसलिए सावरकरजी ने अपने अनुयायी रत्नागिरी के मशहूर दानी श्रीमंत भागोजी शेठ कीरजी को ऐसा एक भव्य मंदिर बनवाने को प्रेरित किया कि जिस में सभी जाति के धर्म बांधवों को मुक्त प्रवेश मिले और वे पूजा भी कर सके। आज लोग इस मंदिर को पतितपावन मंदिर के नाम से जानते हैं। रत्नागिरी के ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों में इस मंदिर की गिनती होती है।

समाज के सभी घटक उच-नीचता के भाव को त्याग कर एकता के सूत्र में बंध जाये इसके प्रतिक के रूप में सहभोजन का कार्यक्रम भी उन्होंने बडे उत्साह से चलाया। समाज सुधार संबंधी कार्यों का पतितपावन मंदिर एक केंद्र बन गया।

सावरकरजी बडे विज्ञाननिष्ठ व्यक्ति थे। अंधश्रद्धा और कर्मकांडों पर उन्होंने जमकर हमला बोला। प्रखर राष्ट्रवाद और अपने सिद्धांतों पर अटल रहने की उनकी खासियत उनके सहवास में रहे लोगों के मन में ऐसी बसी है कि आज भी वे लोग उस समय की स्मृतियों को

जगाते हुए भाव विभोर हो जाते हैं।

स्वातंत्र्य संग्राम के इतिहास में रत्नागिरी का नाम उंचा करने में लोकमान्य टिलकजी के साथ सावरकरजी का नाम आज भी लोग बड़े गौरव से लेते है। रत्नागिरी के कारागृह में जिस कमरे में सावरकरजी को रखा था उस कक्ष को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में आज भी रखा गया है।

ऐसे समाज सुधारक क्रांति सूर्य सावरकरजी को भूल पाना असंभव है।

स्वातंत्र्यवीर सावरकर - एक अग्रणी

* 1906 मे स्वदेशी का उद्घोष करनेवाला पहला भारतीय....
* संपूर्ण स्वातंत्र्य की खुलेआम माँग करनेवाला पहला भारतीय....
* 1857 के संग्राम को स्वतंत्रसंग्राम कहलाने वाला पहला भारतीय....
* राजकीय कारणों से आजन्म कारावास की दो सजाएं पानेवाला पहला भारतीय....
* बॅरिस्टर की परिक्षा उत्तीर्ण होकर भी राजकीय कारणों से पदवी को अस्वीकार करनेवाला पहला भारतीय....
* हेग स्थित अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में जिसका वैयक्तिक मुकद्दमा लड़ा गया ऐसा पहला राजकीय कैदी.

"हिंदी को राष्ट्रीय भाषा स्वीकार करने में अन्य प्रांतों की भाषा के संबंध में कोई अपमान की भावना या ईर्ष्यालू भावना नही हैं। हमें अपनी प्रातीय भाषाओं से भी उतना ही प्रेम है जितना कि हिंदी से। ये सब भाषाएँ अपने अपने क्षेत्र में उन्नत होती रहेगी । वास्तव में कुछ प्रांचीय भाषाएँ हिंदी भाषा की अपेक्षा अधिक संपन्न हैं। परंतु फिर भी हिंदी अखिल हिंदुत्व की राष्ट्रभाषा होने के लिए सब प्रकार से सर्वश्रेष्ठ हैं"

– विनायक दामोदर सावरकर

प्रार्थना

इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर हो ना,
इतनी शक्ति.....(२)

हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर हो ना,
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो ना,
इतनी शक्ति.......(२)

दूर अज्ञान के हो अंधेरे
तू हमें ज्ञान की रोशनी दें
हर बुराई से बचते रहें हम
जितनी भी दें भली जिंदगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से
भावना मन में बदले की हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो ना,
इतनी शक्ति.......(२)

हम ना सोचें हमें क्या मिला है
हम यह सोचें किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों के बाँटे सभी को
सबका जीवन ही बन जाय मधुवन
अपनी करुणा का जल तू बहा के
कर दे पावन हर एक मन का कोना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो ना,
इतनी शक्ति.......(२)

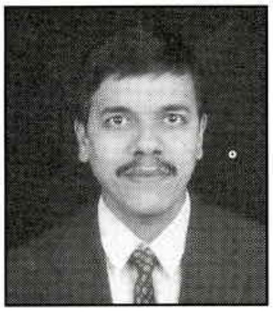

■ संकलन ■

श्री. राजेश मधुसूदन देसाई
कोंकण रेल्वे, रत्नागिरी

मेरे घर में सावरकरजी

स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी का शिरगांव (रत्नागिरी) में वास्तव्य तथा कार्य

स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकरजी को 6 जनवरी 1924 को कारागृह से छोडने के बाद उनपर दो शर्ते रखी थी। एक उनको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राजकारण में हिस्सा नहीं लेना है और रत्नागिरी छोड़कर कही भी जाना नहीं। इसके लिए उनको सरकार की अनुमति लेनी जरुरी है। इस प्रकार 8 जनवरी 1924 से 17 जून 1937 तक स्वा. सावरकरजी रत्नागिरी में स्थानबद्ध थे। रत्नागिरी में उस वक्त प्लेग का प्रादुर्भाव हुआ था। उस कार्यकाल में उनको रत्नागिरी से बाहर रहने के लिए नहीं छोडा गया। तब रत्नागिरी से लगभग तीन कि.मी. दूर शिरगांव गाव में श्री. विष्णूपंत दामलेजी ने उनको अपना घर दिखाया और रहने के लिए न्यौता दिया। सावरकरजीने उसे तुरन्त मान लिया और इसप्रकार 24-11-1924 से 20-06-1925 तक स्वा. सावरकरजी का वास्तव्य हमारे पर दादाजी श्री. विष्णूपंत दामलेजी के घर में रहा। हिंदुस्तान को स्वातंत्र्य दिलाने में महान कार्य करनेवाले इस हस्ती का वास्तव्य हमारें घर में हुआ यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। उस वक्त जहाँ सावकरजी से संबंध रखना मतलब अंग्रेज सरकार का रोष सहना था। समाज के उच्चभ्रू उस घर को बहिष्कृत करते थे। इसके बावजूद उस वक्त मेरे परदादाजी श्री. विष्णूपंत दामलेजी ने अपने घर में उनको जगह दी, यह उनके धैर्य, दूरदृष्टी तथा राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। यह अपने आपमें बडी उपलब्धि थी। उनके इस गुण को मेरा प्रणाम।

स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी के जीवनकाल में रत्नागिरी के वास्तव्य काल में उन्होंने सामाजिक कार्य की नींव रखी। हमारे घर में रहते हुए उन्होंने अंग्रेजी ग्रंथ, कविता लेखन ऐसा साहित्यिक काम किया। साथ में उन्होंने समाज के सभी जाति वर्गों को साथ लाकर आपस में अच्छा सहयोग देने तथा उनके मतभेद मिटाने का कार्य किया।

शिरगांव में रहने के बाद लगभग डेढ़ महिने में श्री हनुमान जयंती का त्यौहार था। तब गाव में एक हनुमानजी के मंदिर का निर्माण हुआ था। जब सावरकरजी को बुलाया गया तब उन्होंने कहाँ की अगर सब जाति और पंथों के लोगों को बुलाओगे तो मैं जरूर आऊंगा। उस मंदिर में उन्होने अपने अमोघ तथा अस्खलित वाणी से सभी उपस्थितों को प्रभावित किया और एक जगह बिठाया। उस वक्त यह कितना कठिन था, यह केवल सोचने की बात है। उस दिन पालखी प्रदक्षिणा के दौरान स्वा. सावरकरजी ने एक गीत लिखकर गाया उसके बोल थे।

तुम्ही आम्ही सकल हिंदू बंधू-बधू।
तो महादेवजी पिता आपुला चला तया वंदू॥

रत्नागिरी के वास्तव्य के दरम्यान उनको महात्मा गांधीजी तथा डॉ. आंबेडकर जी मिले थे। उस दौरान बाबासाहब फरवरी 1925 में सरसंघचालक डॉ. हेगडेवारजी को मिलने के लिए हमारे घर में आये थे। उसके बाद जब मद्रास के क्रांतिकारक श्री. व्ही. व्ही. एस. अय्यरजी आए थे तब हमारे घर परिसर को सी.आई.डी. के बहुतसे कर्मचारी एवम् अधिकारियों ने घेरा था। ऐसे बड़े लोग जब भी आते थे तो सावरकरजी अपने कमरे में 4-5 घंटो तक दरवाजा बंद करके

विचार विमर्श करते थे। अपनी बाते रखते थें। उस कार्यकाल के दौरान सावरकर जी का दिनक्रम कुछ इसप्रकार था। सुबह सात बजे वह उठते थे। तद्नंतर 25-30 मिनट तक डंबेल्स के सहारे व्यायाम करते थे। उसके बाद एक कप दुध और एक अंडा खाते थे। हमारे घर में अंडा खाना मना था इसलिए वह घर के पिछे जाकर अंडा खाते थे। उसके बाद तुरंत चाय। फिर लगबग 2- 2 1/2 घंटे तक पढते और लिखते थे। साडेग्यारह के दरम्यान नहाते थे। बाद में आधा घंटा ध्यानमग्न बैठते थे। रात के समय नौ से साडे दस बजे तक लेखन करते थे। रात का खाना आठ से साडे आठ बजे तक लेते थे। रात के साडे दस से ग्यारह बजे तक घर के सामने (आंगण) में घुमते थे और ग्यारह बजे सो जाते थे। हमेशा छाता लेकर घर से बाहर जाते थे और जाते वक्त 'हीना' अत्तर कोट पर लगाते थे।

सावरकरजी का अमोघ वक्तृत्व और उनकी कुशाग्र बुद्धि के आधार पर वह हर भाषण में श्रोताओंको अपनी पकड में लेते थे। प्रभावित हुए श्रोता और वक्ता का मनोमिलन उस वक्त देखने को मिलता था। सामाजिक परिवर्तन के कार्य मे यह एक महत्त्वपूर्ण अंग था। उनके वास्तव्य के दरम्यान उन्होने सत्तर पचहत्तर भाषण किए होंगे। सभी में वह कुछ नए विचार लोगों को देते थे। स्वामी श्रद्धानंदजी का खून होने के बाद सावरकरजी ने भाषण में लोगों से सवाल किया कि, स्वामीजी ने समाज के लिए बलिदान किया है। आप आंसू बहाते क्यू बैठे हो? आपके खून मे वह आवेश नहीं? अगर ऐसा कोई है तो "घे करी शिरा जा झुंज, पुरवी तो हेतू।" ऐसी पंक्ति कहकर भाषण की समाप्ती की। लोगों में वह किस प्रकार जनजागृति करते थे इसका यह ज्वलंत उदाहरण है। उनके सभी भाषणों में मेरे दादाजी श्री. मोरेश्वर दामलेजी को उनका स्वामी श्रद्धानंदजी का खून होने के बाद का भाषण, लाला लजपतरायजी के देहांत के बाद का भाषण तथा 'औट घटकेचे नाही औट शतकाचे साम्राज्य" इस विषय पर किया हुआ भाषण बहोत पसंद आया था और उनके दिल को छुआँ था।

अस्पृश्यों के साथ से हिंदू एकता

उन दिनों में अस्पृश्य व्यक्ती को पाठशाला एवम् समाज में अलग दर्जा दिया जाता था। सावरकरजी को इससे बहुत दुख होता था। अगर अंग्रेजों को वापस भेजना है तो हमें आपस में एकता का परिचय देना होगा, सभी हिंदूओं को इकठ्ठा करना होगा यह सोचकर उन्होंने सभी अस्पृश्य समाज को साथ में मिलाने का काम शुरू किया। देवालयों में अस्पृश्यों को स्थान देने के लिए आंदोलन जारी रखा। इस तरह अस्पृश्यता निवारण उनके अजेंडा पर अग्रक्रम में था। सभी जाति वर्गों के लिए खुले मंदिर का निर्माण करने के लिए उन्होंने श्री. भागोजी शेठ कीरजी को उद्युक्त किया। उनके साथ हिंदू सभा के कार्यकर्ताओं ने चंदा जमा किया और आज रत्नागिरी स्थित पतितपावन मंदिर का निर्माण हुआ। इस तरह सभी हिंदूओं को एक साथ मंदिर में जाने का मार्ग खुला हुआ। उस वक्त महाराष्ट्र मे ही नहीं बल्की अखिल भारत में यह पहला मंदिर होगा। आज भी यह सबसे बडी उपलब्धि मानी जाती है। हिंदू समाज को सामर्थ्यवान बनाना हो तो उसमें कोई जातिभेद नहीं होना चाहिए, यह अपने मन तथा शक्ति को दुर्बल बनाता है। जातिभेद का निर्मूलन यह समाज उद्धार की प्रेरणा तथा स्थायी रूप में समाज की ताकत या शक्ती का रूप है यह उनका मानना था। पतितपावन मंदिर में सावरकजी ने गणेशोत्सव शुरू किया और उस महोत्सव के दरम्यान 'हिंदूतील जातीभेद' इस विषय पर भाषण देते हुए उन्होंने अपने इस विचार को पुष्टी दी। इतना ही नहीं जब श्रीमत् शंकराचार्य डॉ. कूर्त कोटींजी के करकमलों द्वारा पतितपावन मंदिर की कोनशिला बिठाने का कार्यक्रम हुआ तब श्री. शंकराचार्यजी को पांडू विठू महार नामक एक अस्पृश्य व्यक्ती के हाथों फूलमाला दी गयी वह दृश्य देखकर सभी उपस्थितों के आँखो में पानी आ गया। इसके आगे चलते 22 फरवरी 1930 में उन्हीं की प्रेरणा से "मुंबई इलाका अस्पृश्यता निवारक परिषद" का छठा अधिवेशन इसी पतितपावन मंदिर में संपन्न हुआ।

सावरकरजी का शिरगांव में वास्तव्य तथा उनका उन दिनों का कार्य मेरे दादाजी श्री. मो वि दामले (माँ के पिताजी) ने "सावरकर स्मृती" नामक पुस्तिका में लिखा है। उस वक्त की स्थिति का इसमें यथार्थ वर्णन है। हमारे घर में उनकी रहने की वह जगह अभी भी अलग सी रखी हुई हैं।

इस प्रकार स्वा. सावरकरजी ने अपने रत्नागिरी तथा शिरगांव के वास्तव्य के दौरान अस्पृश्यता निवारण, अस्पृश्यों का देवालय में प्रवेश एवम् जातीभेद निर्मूलन का आंदोलन ऐसे समाज सुधार के मूलगामी उपक्रम शुरू किए, उन दिनों उनका यह कार्य उनकी महानता दर्शाता है। इस महान कार्यपुरुष को मेरा सादर प्रणाम।

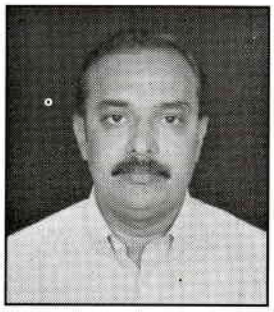

■ शब्दांकन ■

श्री. शैलेश दामोदर बापट

सहा. कार्मिक अधिकारी,
कोंकण रेल्वे, रत्नागिरी

■ संकलन ■

रत्नागिरी विशेष कारागर अधीक्षक

रत्नागिरी विशेष कारागृह

देश की आजादी का संग्राम यह शब्द जब सामने आता है तब याद आती है क्रांतिवीरों की और उनके शिरोमणी स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी की। इस आजादी के जंग में कितने शहीद हुए, कितनों को बंदी बनाया गया, कितनों को फाँसी पे लटकाया गया और इस समय उस पल की यादें जब आती है तब स्वातंत्र्यवीर सावरकर, सेनापती बापटजी की तस्वीर आँखो के सामने उभर कर आती है। इस के साथ ही उभरकर आता है वह कारागर, जिसमें सावरकरजी ने 28 माह बंदिवास में गुजारें।

रत्नागिरी विशेष कारागर पूरे हिंदुस्थान में एक ही विशेष कारागर कहलाया जाता है। इसका निर्माण पुर्तुगालियों ने सन 1834 में किया तत्कालीन भारत वर्ष में कुछ स्थान छोड़कर अंग्रेजों का राज था। अन्य स्थानों में जैसे कि, गोवा, दिव, दमण, कोंकण के पश्चिमी समुद्र तट पर पुर्तुगालियों ने कब्ज़ा कर रखा था। व्यापार हेतु आए हुए अंग्रेजों ने धीरे-धीरे भारत वर्ष में शासन करना शुरू किया वैसे ही उनके राह कदम पर चलते हुए पुर्तुगालियों ने गोवा, पश्चिमी कोंकण जैसे की रत्नागिरी तथा दीव दमण और गुजरात के अन्य भागों में अपना शासन जमाया।

रत्नागिरी विशेष कारागर का इस्तेमाल गोला बारूद रखने के बाद लिए पुर्तुगालियों ने किया। सन 1853 में इस कारागर पर अंग्रेजों ने कब्ज़ा किया तथा इस स्थान को उन्होंने विशेष कारागर में रूपान्तरीत किया। तब उन्होंने इस कारागर को रत्नागिरी विशेष कारागर नाम दिया। आजादी के पूर्व काल में उन्होंने इस कारागर में सैंकड़ों स्वातंत्र्य सैनिकों को बंदी बनाकर रखा

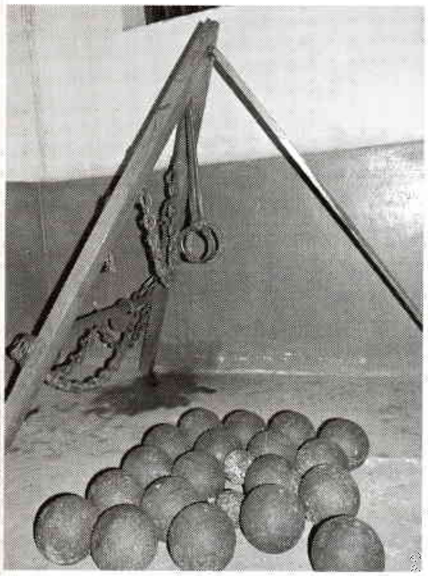

था। स्वातंत्र्यवीर सावरकर, सेना-पती बापट भी यहां बंदी थे।

6 मई 1921 से 3 सितंबर 1923 तक सावरकरजी यहां बंदी थे इस स्थान पर उन्हें इस लिए रखा गया था कि वे यहां से भाग न पाएं, क्योंकि यह कारागर तीनों ओर से समंदर से घिरा हुआ था और आने जाने के लिए एक ही रास्ता था। सावरकरजी को जिस अंधेरी काल कोठरी में रखा था वह सिर्फ 6x8 फिट की थी और उस कोठरी में उन्हें पूर्णत: सलाखों तथा शृंखला से बांधा गया था, दस-दस किलो ग्रॅम के लोहे के बडे गोले चमडे के थैले में रखकर उन्हें उनके पैरो में तथा घुटनो में बांधे जाते थे ताकि वे भाग ना पाएं। इस अंधेरी कोठरी में न तो कोई शौचालय था नाही तत्सम प्रकार की कोई सुविधाएं थी। इस कोठरी में पहुंचने के लिए सात अलग-अलग दरवाजों से गुजराना पडता था।

इस कारागर में बंदी बनाने तथा उक्त वर्णित स्थिति में महिनों गुजारने के बाद तत्कालीन शासक द्वारा उनके कारावास की इस स्थिति में रियायत देते हुए अन्य कैदियों के साथ मिलने-जुलने की अनुमति दी गयी।

हालां कि उन कष्टप्रद दिनों में भी सावरकरजी शिक्षा के प्रति प्रयत्नशील थे। हर मौके का लाभ उठाते हुए कैदियों को शिक्षा के प्रति सजग करते हुए उन्होंने कारागर में कैदियों के लिए पुस्तकालय/वाचनालय शुरू करने में पहल की।

अपने बंदीवास के दौरान सावरकरजी ने कर्तव्य निष्ठा, सामाजिक समता इसका ज्ञान कैदियों को दिया एवम् उनके मन में बंधुत्व और अखंडता की भावना की ज्योत जलायी।

इस कारागर में 24 नवंबर 1931 से 31 दिसंबर 1935 तक सेनापती बापट भी बंदी थे।

स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद विद्यमान स्थिति में इस कारागर में ढ़ेर सारे बदलाव हो चुके हैं। आज इस कारागर में कैदियों के लिए विविध• क्रियाकलाप एवम् कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

* दिन की शुरुआत कैदियों द्वारा की गई प्रार्थना से होती है।
* हर मंगलवार को अनिरुद्ध बापू के अनुयायी कारागर में कैदियों के लिए प्रार्थना का आयोजन करते हैं।
* प्रजापिता ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय के अनुयायी हर गुरुवार को प्रार्थना का आयोजन करते हैं।
* समाज सेवकों द्वारा हर शुक्रवार को भगवद् गीता के पाठ का आयोजन होता है।
* हर शाम कारागर के खेल के मैदान में कैदियों को व्हॉलीबॉल खेलने की अनुमती दी जाती है।
* हर सप्ताह में आयोजित बंदी दरबार में कैदीयों के वैयक्तिक समस्याओं पर विचार-विमर्श होता है।
* कैदियों के मनोरंजन के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन होता है।
* कारागर में वाचनालय/पुस्तकालय है और इसके लिए सरकारी नगर वाचनालय रत्नागिरी के जरिए, प्रतिसाद सामाजिक संस्था रत्नागिरी द्वारा पुस्तकों का प्रावधान किया जाता है।
* सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा समय-समय पर वैद्यकिय चिकित्सा के सेमिनार का आयोजन कारागर में किया जाता है।
* कारागर के मुख्य द्वार के सामने स्थानीय लोगों द्वारा बनाया हुआ महापुरुष देवता का मंदिर है, उसमें जाकर कारागर के कर्मचारी हमेशा प्रार्थना करते हैं।

"राष्ट्रीय एकता के लिए एक राष्ट्रभाषा चाहे सबसे महत्त्वपूर्ण अंग न हो, पर महत्त्वपूर्ण अवश्य है और यह भी निश्चित है कि हिंदी के सिवा और कोई प्रांतीय भाषा भारत की राष्ट्रभाषा बनने का दावा नही कर सकती।"

– प्रेमचंद

आपके पत्र क्र. नराकास रहगा 100 दि. 20 जनवरी 2009 के द्वारा प्रेषित पत्रिका 'राजभाषा रत्नसिंधु' का प्रथम अंक प्राप्त हुआ। मनोहारी दृश्यो से सुसज्जित पत्रिका का आवरण पृष्ठ स्वत: ही आकर्षित करता है। मुखपृष्ठ की तरह ही पत्रिका का आंतरिक कलेवर भी बहुरंगी साहित्यिक रचनाओं तथा विविध जानकारियों से परिपूर्ण है। रचनाओं में विशेषकर श्री. दामोदर खडसे का 'बदलता आर्थिक परिवेश और हिन्दी' तथा श्री. शरद कणबरकर का 'सूरदास का भ्रमरगीत'ने प्रभावित किया।

अत्यंत स्पष्ट फोटोग्राफ्स तथा उच्चस्तरीय मुद्रण व उत्कृष्ट संपादन के लिये संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

शुभकामनाओं के साथ,

भवदीय

(ब. कु. पाठक)

महा प्रबन्धक एवं अध्यक्ष न.रा.का.स. होशंगाबाद

कृपया अपने कार्यालय के दिनांक 20-01-2009 के पत्र सं. नरकास. रहगा. 100 का अवलोकन करें। 'राजभाषा रत्नसिंधु' के प्रवेशांक की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।

रत्नागिरी नराकास के सदस्य कार्यालयों के सहयोग से प्रकाशित 'राजभाषा रत्नसिंधु' का राजभाषा परिवार की पत्रिकाओं में हार्दिक स्वागत है। प्राकृतिक सुंदरता से सुशोभित आवरण पृष्ठ पत्रिका को आकर्षक बना रहा है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय व सारगर्भित है। विशेषकर बहुआयामी कवि डॉय हरिवंशयराय 'बच्चन' व कविताओं में 'मिट्टी' व 'नारी' अच्छी लगी। पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो व रत्नागिरी, नराकास का यह छोटा सा पौधा शीघ्र ही वृक्ष का आकार ले ले, इन्ही शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

(डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा)

सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव न.रा.भा.का. समिति

आपके कार्यालय के हिन्दी समाचार ''रत्नसिंधु'' की एक प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए हार्दिक धन्यवाद।

''रत्नसिंधु'' में प्रकाशित रचनाएं सराहनीय है। पत्रिका का मुखपृष्ठ एवं साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका में विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रलेख रचनाएं जानकारी प्रद है।

पत्रिका के लिए हमारी शुभकामनाएं।

भवदीया,

वासंती वैद्य

सचिव मुंबई (उ) नराकास एवं प्रबंधक (प्र) राभा कार्यान्वयन

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पो. लि.

रत्नागिरी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति शिवाजीनगर, रत्नागिरी महाराष्ट्र द्वारा राजभाषा हिंदी की अर्धवार्षिक पत्रिका ''राजभाषा रत्नसिंधु'' प्राप्त हुई। पत्रिका का कलेवर उच्च कोटि का है तथा इसकी पाठ्य सामग्री आमलोगों के लिए सहज एवं सुगम है। प्रस्तुत पत्रिका में सारगर्भित रचनाओं को स्थान दिया गया है तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयां की राजभाषा संबंधी गतिविधियों का भी उल्लेख किया गया है।

आशा है आपकी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति 'राजभाषा' के विकास और कार्यालयों में उसके कार्यान्वयनकी दिशा में नये आयाम को छूयेगी।

पत्रिका भेजने के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद।

भवदीय

(डॉ. पुरुषोत्तम कुमार)

सचिव, नराकास, जमशेदपूर

आपके उपर्युक्त पत्र द्वारा भेजी गई हिन्दी अर्ध्द वार्षिक पत्रिका ''राजभाषा रत्न सिन्धु'' की प्रति इस कार्यालय में प्राप्त हुई है। हमारी तरफ से हार्दिक शुभ कामनाएं।

Retnagiri TOLIC Half Yearly Magazine "Rajbhasha Retnasindhu" sent vide your letter cited has been received in this office. Our Hearty congratulations.

भवदीया

(प्रसन्नकुमारी)

सचिव न रा का स, एवं

सहायक निदेशक (रा. भा.)

बी.एस.एन.एल., कोल्लम

रत्नागिरी दर्शन

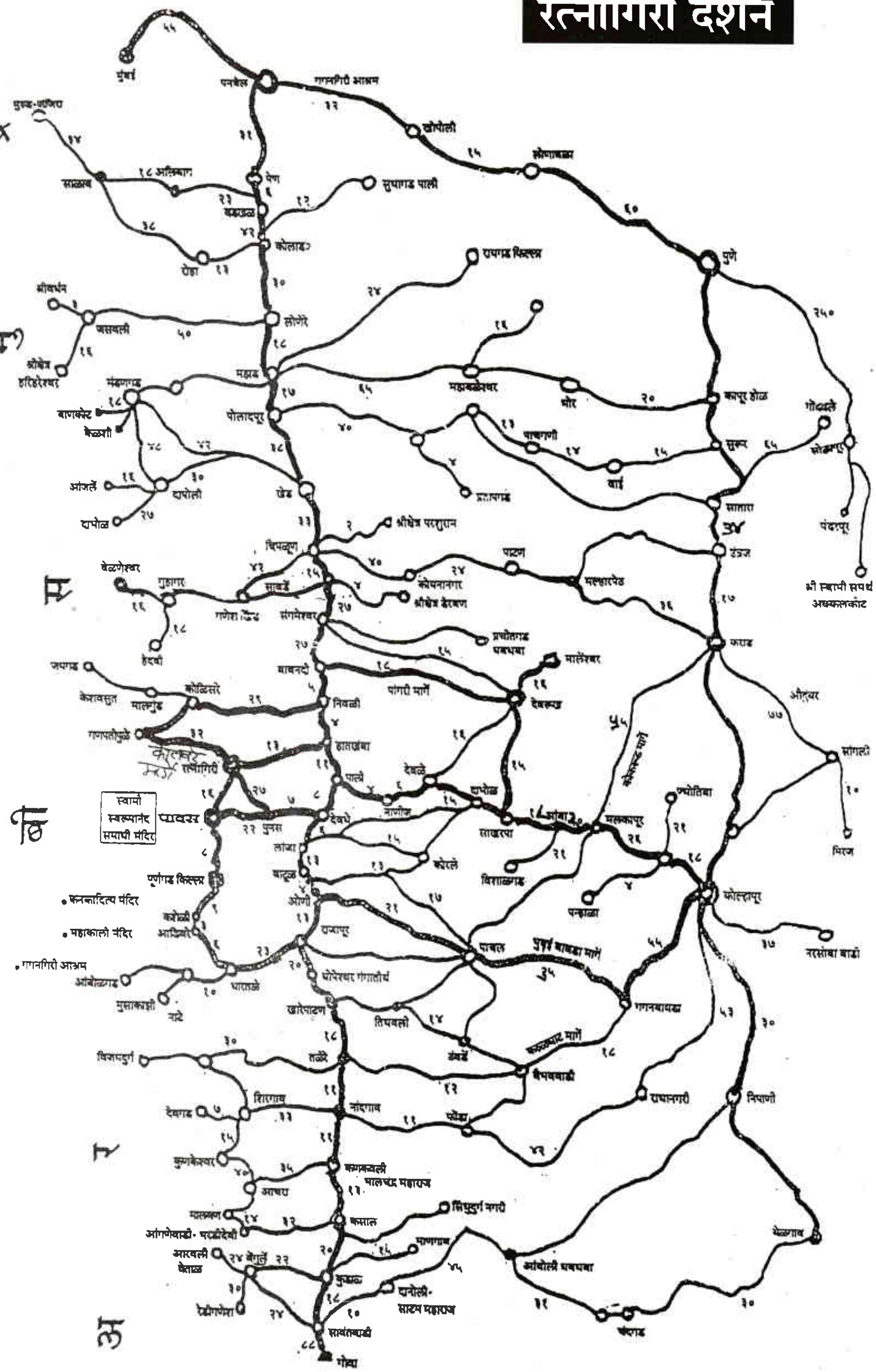

प्रसिद्ध स्थल :

१) थिबा पॅलेस
२) पतित पावन मंदिर
३) रत्नदुर्ग किला
४) भागेश्वर मंदिर
५) लो. टिळक स्मारक
६) मत्स्यालय
७) भाट्ये सुरूवन
८) काला और सफेद समुंदर
९) अठारह हाथों का गणेश
१०) पूर्णगड किला
११) लक्ष्मीकेशव मंदिर (कोलिसरे)
१२) दत्त मंदिर (चिंचखरी)
१३) पानवल - रेलवे पूल
१४) आर्यादुर्गा देवी (हसोल)
१५) टेंबे स्वामी (राजापूर)
१६) पिंगुळी - कुडाळ (श्री राऊळ महाराज मठ)
१७) टेंबे स्वामी - माणगांव

सभी कंप्यूटरों में यूनीकोड में काम करने के संबंध में आवश्यक महत्वपूर्ण जानकारी

अगर कोई भी सरकारी कार्यालय, सरकारी अधिकारी या कर्मचारी कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने की इच्छा रखे तो आसानी से अपने कंप्यूटर पर राजभाषा हिन्दी एवं अपनी मातृभाषा में आसानी से काम कर सकता है। इसके लिए किसी भी हिन्दी सॉफ्टवेअर को खरीदने की जरुरत ही नहीं है।

यूनीकोड में सभी कंप्यूटरों में काम करने के संबंध में कई लोगों को जानकारी नहीं है कि कंप्यूटर में हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएं इनबिल्ट हैं। यानी अब आपको अलग से हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा का कोई सॉफ्टवेयर खरीदने की जरुरत ही नहीं है। यही कारण है कि जानकारी के अभाव में हम अभी भी हिन्दी सॉफ्टवेअर खरीदने में पैसा खर्च कर रहे हैं जब कि पूरे देश के हिन्दी कामकाज में एकरुपता लाने के लिए इनबिल्ट यूनीकोड का इस्तेमाल अनिवार्य होना चाहिए।

इस संबंध सचिव, भारत सरकार (राजभाषा) द्वारा सरकारी विभागों के लिए एक दिशा निर्देश जारी किया गया है। इसमें साफ़-साफ़ बताया गया है कि विंडो 2000, विंडो XP और vista तथा उसके बाद के सभी कंप्यूटर्स में हिन्दी का यूनिकोड फोण्ट 'मंगल' एवं अन्य सभी भारतीय भाषाओं के फोण्ट इनबिल्ट हैं। इसलिए अब हमें अलग से हिन्दी का कोई सॉफ्टवेअर या प्रोग्राम खरीदने की जरुरत ही नही हैं। हिन्दी एवं अपनी मातृभाषा में इतनी सुविधा होने के बाद भी हम लोग इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

यदि अपने कार्यालय के या घर के कंप्यूटरों/लेपटॉप्स में यूनीकोड को सक्रिय कर दिया जाए तो बहुत सुचारु ढंग से हिन्दी में और अपनी मातृभाषा में आसानी से कामकाज कर सकते हैं। इसी सुविधा के माध्यम से हम हिन्दी में ई-मेल, चैट आदि भी कर सकते हैं। इसलिए अब हम सभी को यूनिकोड समर्थित सुविधा का प्रयोग शुरु कर देना चाहिए ताकि पूरी दुनिया के हिन्दी कामकाज में एकरुपता लाई जा सके और एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर में, एक शहर से दूसरे शहर में एवं दुनिया के किसी भी कोने में हमारी हिन्दी की फाइल खुल जाए। फांट आदि की समस्या न हो इसलिए यूनीकोड में काम करने की आवश्यकता है।

यदि आपके पास पुराना कोई भी सॉफ्टवेयर है तो उस सॉफ्टवेयर में बनी फाइलों को आसानी से यूनीकोड में कन्वर्ट कर सकते हैं पुरानी फाइल को कुछ भी नुकसान नहीं होगा। आपके कार्यालय में जो सॉफ्टवेयर उपलब्ध उसमें आप काम करने में सक्षम हैं लेकिन सोचिए क्या आपके कार्यालय या घर का सॉफ्टवेयर यूनीकोड समर्थित है? क्या आप ओपन फोण्ट में काम कर रहे हैं? इन सब बातों पर विचार करें और मेरा आपसे अनुरोध है कि भविष्य में आप पूरे विश्व में हिन्दी में या अपनी मातृभाषा में काम करने के संबंध में एकरुपता लाने के लिए यूनीकोड का ही प्रयोग करें।

आप अपनी इच्छानुसार अपनी पसंद का की-बोर्ड चुनकर अपनी भाषा में काम कर सकते हैं और की-बोर्ड को डेस्कटॉप पर रख कर माउस की सहायता से क्लिक करके टाइप भी कर सकते हैं।

- साभार प्रस्तुत

यूनीकोड को सक्रिय करने के लिए अंग्रेजी में प्रतिस्थापन नोटस्
INSTALLATION NOTES

a. To install the utility, go to Control Panel > Regional and Language Setting.

b. Select "Language" tab and check the option "Install files for complex scripts and left-to-right language and insert Win XP CD in your CD-ROM drive.

c. To unzip hindi_IME_setup.zip either right click the file and select the extract option or double click the file and follow the steps.

d. Run Hindi Setup.exe and follow the instruction in the setup program.

e. Reboot your system.

f. Go to Control Panel > Regional and Language Settings. Select "Language" tab, Click "Details..." under "Text services and input languages". The following window will be displayed.

g. Click on "Add..." to add the new input language.

h. Select "Hindi" as the "Input Language".

i. Click on "OK". The following screen will be displayed.

j. Click on "Apply" to exit the window. A "Language Indicator" will appear on Windows taskbar.

k. To start typing in Hindi, click the Language Indicator located in the System Tray on the right side of the Windows taskbar.

l. Select Hindi as the language from the Language Indicator. You can also switch between Hindi / English as the language of entry by pressing Alt + Shift.

"राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।"

– लोकमान्य टिळक

"देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जानेवाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।"

– सुभाषचंद्र बोस

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयोजक
बैंक ऑफ़ इंडिया की रत्नागिरी स्थित सुसज्जित नये भवन की वास्तु

रंगोली का अनोखा अविष्कार

हिंदी दिवस पर आयोजित पुरस्कार समारोह.....

हिंदी दिवस पर आयोजित पुरस्कार समारोह.....

प्रवेशांक का विमोचन तथा बैठक की गतिविधियाँ....